



श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय)



हिंदी विभाग

सुगंधिका

(ई-पत्रिका)

तृतीय अंक
मई 2020

सम्पादिका
डॉ पूनम सिंह

सह सम्पादिका
डॉ विभा नायक

सन्देश



सोशल मीडिया सूचना क्रांति तकनीक की एक महत्वपूर्ण देन है। स्थान आधारित दूरियों को मिटाने में इसका बड़ा हाथ रहा है। आप कहीं पर भी हों, सोशल मीडिया द्वारा अपने मित्रों, संबंधियों, परिवार-जनों, संस्था और घटनाओं के साथ निरंतर जुड़े रहते हैं। इसका श्रेय फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया द्वारा संचालित ऐप्स को जाता है। पुराने समय में उपलब्ध संपर्क-साधन जैसे - पत्र, टेलीग्राम, लैंडलाइन फ़ोन आदि आज बीते ज़माने की बात हो गए हैं। सोशल मीडिया तत्काल हमारा संपर्क इच्छित व्यक्ति, स्थान और घटना के साथ स्थापित करने में सक्षम है। दृश्य- श्रव्य दोनों माध्यमों की तकनीक से युक्त सोशल मीडिया हमें सामाजिक दायरे के विस्तार का अनुभव कराता है। सोशल मीडिया की यही खूबियाँ उसकी प्रसिद्धि का कारण बनी हैं। परंतु वास्तविकता को नज़दीक से देखने पर ज्ञात होता है कि इसके द्वारा हमारी सामाजिक सोच का दायरा सीमित हो जाता है। यह व्यक्तिगत विचार के स्थान पर सामूहिक विचारधारा को बढ़ावा देता है।

निरंतर सोशल मीडिया के प्रयोग करने से व्यक्ति के व्यवहार में भी परिवर्तन आता है और जीवन के विविध क्रियाकलापों को भी वह निर्धारित करने लगा है। उदाहरण के लिए विशेष अवसरों पर शुभकामना अथवा शोक संदेश भेजने के लिए हम पूर्वनिर्मित और सोशल मीडिया द्वारा सुझाए गए संदेशों का उपयोग करते हैं, जो हमारी सृजनात्मकता को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत जीवन में सामाजिक मेल-जोल, बातचीत और व्यवहार को परिवर्तित किया है। हम वीडियो कॉल करते हैं मिलने नहीं जाते, एक घर में रहते हुए भी व्हाट्सएप, एस.एम.एस पर संदेश भेजते हैं, साथ बैठकर भी फेसबुक, गूगल सर्च आदि में व्यस्त रहते हैं।

सोशल मीडिया का प्रयोग भी अनुशासित और संयमित रूप में ही करना वाँछित और उपयोगी है। हिंदी विभाग द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिका ने इस विषय को उठाकर एक विचारोत्तेजक और उपयोगी मुद्दे पर बहस की शुरुआत की है। आशा है जीवन में तकनीक के प्रयोग को अधिक उद्देश्यपूर्ण और सार्थक रूप में अपनाने की दिशा में यह अंक सफल रहेगा।
शुभकामनाओं सहित!

डॉ साधना शर्मा
प्राचार्या



असल ज़िन्दगी की जद्दोजहद से दूर चलो एक आभासी दुनिया (virtual world) की सैर करते हैं। एक ऐसी दुनिया जहाँ विश्व के किसी भी कोने में रहने वाले अंकल, आंटी, दोस्त, संबंधी, समाज सुधार का जज़्बा रखने वाले तमाम तरह के मददगार साथी आपके साथ आपके मीडिया ग्रुप पर बहुत ही सभ्य अंदाज़ में नजर आएंगे।

लेकिन क्या है यह सोशल मीडिया और क्यों सिमट रहा है हमारा जीवन इसमें? सोशल मीडिया संचार का एक विशाल नेटवर्क है, जो बहुत ही तीव्र गति से सूचनाओं के आदान प्रदान करने में सक्षम है, जिसमें हर क्षेत्र की खबरें दृश्य- श्रव्य माध्यम में होती है। इंस्टाग्राम, फेसबुक, ट्विटर, वॉट्सएप आदि पर किसी को लोकप्रियता हासिल करनी हो, किसी की मदद करने का मामला (crowd funding) हो, दुनिया को अपनी यात्राओं अपनी उपलब्धियों की जानकारी मुहैया करवानी हो, परस्पर किसी सुंदर विचार वीडियो, मनोरंजक बातों का आदान-प्रदान करना हो, सोशल मीडिया एक बेहतरीन प्लेटफॉर्म है जहाँ व्यक्ति स्वयं को अथवा अपने किसी उत्पाद को ज्यादा लोकप्रिय बना सकता है। आज फिल्मों के ट्रेलर, टीवी प्रोग्राम का प्रसारण भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है। वीडियो तथा ऑडियो चैट भी सोशल मीडिया के माध्यम से सुगम हो पाई है। लेकिन आज ऐसा लगता है कि सोशल मीडिया के बिना हमारे जीवन की कल्पना करना मुश्किल है परन्तु अत्यधिक उपयोग की वजह से हमें इसकी कीमत भी चुकानी पड़ती है।

सोशल मीडिया छोटे बड़े सभी के लिए है तो ज़िम्मेदारियाँ भी सभी की हैं। ग़लत, भ्रामक, उकसाने वाली सामग्री किसी को संप्रेषित ना किया जाए और इतना ही सीमित उपयोग किया जाए जितने से हमें अहसास हो कि हमारा जीवन सिर्फ इसके आसपास सिमटने की बजाए अपने परिवार, समाज, गली-मोहल्ले में ज़्यादा सार्थक सामाजिक फैलाव पाए।

असल में सोशल मीडिया का यदि सुविधा और समय अनुसार उपयोग किया जाए तो आप इसके ऊपर सवार हो सकते हैं और यदि आप इसकी गिरफ्त में आकर समय में समाज, परिवार एवं उत्पादक कार्य बर्बाद करते हैं तो इसके बेमोल गुलाम बन जाते हैं और किसी भी तरह की गुलामी के संकेत होना कतई अच्छा नहीं है। यदि सोशल मीडिया के साधनों का उपयोगिता की दृष्टि से प्रयोग किया जाए तो यह आपको नौकरी तलाशने, सामाजिक और राजनीतिक विकास की पहल करने, प्रेरक भाषण सुनने, लोगों से मेलजोल बढ़ाने में मददगार साबित हो सकता है। परंतु यदि हम दिन रात का ध्यान ना रखकर इस सोशल मीडिया में अपने जीवन को सिमटा लेंगे तो हमारे पारिवारिक एवं सामाजिक संबंध, हमारा स्वास्थ्य, हमारी विचार दृष्टि, हमारी दिनचर्या बहुत ही मशीनी हो जाएगी। सोशल मीडिया पर अपनी एक अच्छी छवि बना लेना अलग बात है लेकिन असल बात है कि आप अपने सामाजिक जीवन में कितने सोशल हैं क्योंकि आपके सामाजिक कार्य आपके व्यक्तित्व का, आपकी कार्यशैली का हिस्सा हैं। किसी की तारीफ और वाहवाही पाने के लिए आप कर्मशील नहीं हैं, आप कर्मशील हैं क्योंकि यह आपका स्वभाव है। इसलिए यदि आप अपने जीवन को सोशल मीडिया में सिमेटने की बजाय आम सामाजिक संपर्कों में समेटे जिससे आपके कर्म क्षेत्र को विस्तार मिले और शादी, नौकरी एवं भौतिक सुख-सुविधाओं के अतिरिक्त कुछ ऐसा कार्य करें जिससे समाज में उत्पादकता (productivity) बढ़े।

अंत में सिर्फ इतना ही कि ज्ञान क्षेत्र सीमित है अज्ञान असीमित है। प्रकाश के घेरे बहुत छोटे हैं अंधकार की चादर बहुत विशाल है। बस विवेक का प्रयोग करते हुए सोशल मीडिया के प्रकाश के घेरे और अंधकार की चादर में दीप्त और दमित होना आपके हाथ में है।

अत्यंत खुशी के साथ एक और अंक आपके हाथों में सौंपते हुए....

विभाग प्रभारी

डॉ पूनम सिंह

सह सम्पादिका की कलम से



जैसे-जैसे व्यक्ति चेतना बदलती है, प्रवृत्ति बदलती है, लोक रुचि बदलती है और ये सब बदलाव सामूहिक चेतना से जुड़कर होते हैं, तो मान लीजिए एक नए युग का आगमन निकट है। आज से कुछ समय पहले जब मुख्य धारा के मीडिया को चुनौती देते सोशल मीडिया ने अपने कदम जमाने शुरू किये थे, तब आलोचकों और विश्लेषकों के अपने-अपने मत थे। एक वर्ग यह मानता था कि इससे मुख्य धारा के मीडिया के आभिजात्य को चुनौती मिलेगी और वह पूंजी व राजनीति के इर्दगिर्द सिमटते अपने दायरों से मुक्त होकर जनवादी होने के लिये बाध्य होगा क्योंकि सोशल मीडिया की पैनी नज़र उसे उच्छृंखल नहीं होने देगी। तो वहीं एक वर्ग का यह भी मानना था कि यह एक ऐसा हथियार है जिसके प्रयोग से अधिक कुप्रयोग की संभावना है। पर उस समय भी किसी ने यह नहीं सोचा होगा कि POST MORDEN ULTRA MODERNITY के इस युग में VIRTUAL LIFE में सोशली एक्टिव न होना जीवित न होने जैसा माना जाएगा। यानी अब सोशल मीडिया को हर 'अंधेरी खोह' के साथ... जिसको परदा चाहिये उसको भी बेपर्दा करने का जायज़ / नाजायज़ हक हो जाएगा। हक क्यों, कैसे, जैसे प्रश्नों का उत्तर देना इसलिए कुतर्क है क्योंकि ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने का हक उस युग को ही है जो इन सारी नई रीतियों को एक बाढ़ की तरह अपने साथ लाया है। और भला युग उत्तर दे भी तो क्यों जबकि वह जानता है कि उसकी प्रतिबद्धता बदलती वृत्तियों वाले लोक से नहीं बल्कि उस समय से है, जिसके अदृश्य तंतुओं से वह बंधा है। तो यदि युग उत्तर देगा तो समय को ही। जिस प्रकार से वर्तमान परिदृश्य बदल रहा है, ऐसा लग रहा है जैसे वर्तमान युग या यूँ भी कह सकते हैं कि ULTRA MODERN SOCIAL युग समय को उत्तर देने की तैयारी में है। शायद उसका जवाब यह हो-

“इस चुनौती की स्थिति में जब हर ओर मृत्यु का साया मंडरा रहा है, सोशल मीडिया ही वह शक्ति है जो दूरी के बावजूद अपने-अपनों के निकट होने का, उनके स्वस्थ और सुरक्षित होने का विश्वास दिलाती है। भौगोलिक दूरियों को

जिसने भावनाओं के ज्वार से पाट दिया है। उसने मनोरंजन भी दिया है और अकेलेपन में डूबते उतराते मन को एक सहारा भी। यदि आज उसका सहारा न होता तो मानवता और अनगिनत ज़िन्दगियों को न जाने कितनी गम्भीर क्षति का सामना करना पड़ता! इसलिए तमाम दोषों के बावजूद भी सोशल मीडिया आज के युग की सबसे बड़ी प्रासंगिकता है। लोक से जुड़े रहने का और लोक को जोड़े रखने का एक प्रयास है।”

डॉ. विभा नायक

अनुक्रमणिका

छात्राओं की कलम से....

इंटरनेट का माया जाल
सोशल मीडिया का बुखार
परिवर्तन ही जीवन का आधार
सोशल मीडिया भी देखो
सोशल मीडिया में सिमटता जीवन
सेल्फी वाली लड़की
यहाँ कोई अपना नहीं
काश! आसमान का एक कोना होता
हार को जीत बनाना होगा
बुद्धि
दिल मेरा रोता है
जब सारी चिंता भुला रही
वह सुबह कभी तो आएगी
वह एक दिन
मेरी बेंगलुरु की यात्रा
सोशल मीडिया में सिमटता जीवन
भारतीय सभ्यता पर मीडिया का प्रभाव

वर्तमान सदस्यों की कलम से....

सोशल मीडिया
सोशल मीडिया में सिमटता जीवन
प्रतिभा राय के उपन्यास द्रौपदी पर आधारित रेडियो वार्ता
यात्रा वृत्तांत
सोशल मीडिया और हमारे बदलते सरोकार
रचनाकार क्या करता है
अपनी आभासी दुनिया में नहीं

वरिष्ठ (सेवानिवृत्त) सदस्यों की कलम से....

विज्ञान, प्रकृति और भारतीय चिंतन
अवसर
महादानव

विभागीय गतिविधियाँ....

सपना मिश्रा
साक्षी जायसवाल
निक्की फैसल
ज्योत्सना
नौशाबा
नौशाबा
नौशाबा
पूजा
अंजलि कपूर
अंजलि आर्य
गायत्री प्रजापति
गायत्री प्रजापति
नेहा पॉल
सनोवर चौरसिया
नौशाबा
नौशाबा
अनामधन्या

डॉ. शगुन अग्रवाल
डॉ. गीता शर्मा
डॉ. विभा नायक
डॉ. सीमा सिंह
डॉ. वंदना
डॉ. अनुराग सिंह शेखर
डॉ. दीपा

डॉ. राधिका सिंह
डॉ. राधिका सिंह
डॉ. राधिका सिंह

छाया चारों ओर इंटरनेट का जाल है,
सोशल मीडिया से लोगों का बुरा हाल है,
कोई फ़ेसबुक, कोई इंस्टाग्राम,
दिनभर बैठ चलाते हैं।

माँ बोले साथ बैठ जा तो मुँह बनाते हैं,
अब कोई खुद को इस जाल में फँसने से ना
रोक पाता है, इसमें फँसकर
इन्सान गुम हो जाता है।

अपनी ज़िम्मेदारी कर्तव्यों से वह,
मुँह मोड़ लेता है,
इसको अपना काम समझकर,
निष्ठा से निभाता है।

अब सामने से किसी को नमस्कार न करके,
व्हाट्सएप पर गुड मॉर्निंग,
भेजा जाता है,
मां बाप से भी अब तो चैट,
पर हाल पूछा जाता है।

खाना खा ले खुद ना कह कर व्हाट्सएप पर,
मैसेज कर बुलाया जाता है,
इसे सोशल मीडिया का नया,
ज़माना कहा जाता है।

अब तो जीवन का फैसला भी,
सोशल मीडिया के कमेंट,
और लईक पर आधारित है,
ज्यादा लईक और कमेंट के लिए,
तरह-तरह के पोज बनाए जाते हैं,
जो है नहीं वही दिखाया जाता है।

इतने सारे फिल्टर है खुद को,
ही ना पहचान पाते हैं,
सोशल मीडिया में लोग इतने गुम हो रहे हैं,
कि आसपास के परिवेश से बेखबर हो रहे हैं।

मित्रों से कभी हाल ना पूछकर,
सोशल मीडिया पर हज़ारों फ्रेंड्स,
बनाए जा रहे हैं,
सोशल मीडिया पर हज़ारों दोस्त,
बनते जा रहे हैं,
फिर भी इंसान अकेले होते जा रहे हैं,
और हम इसे सोशल मीडिया का आधुनिक,
युग कहे जा रहे हैं।

सपना मिश्रा
(बी. ए. प्रोग्राम)

सोशल मीडिया का बुखार

सभी प्राणियों पर धरती के,
छाया सोशल मीडिया का बुखार,
जिधर घुमाओगे अपनी दृष्टि,
सबके सर तुम्हें झुके मिलेंगे।

बुखार चढ़ा कुछ इस क़दर,
उतरने का जल्दी नाम न ले,
कोई फेसबुक, कोई इंस्टा,
कोई स्नैपचैट पर जुटा हुआ है।

फ़िल्टर का क़माल तो देखो,
सांवला रंग भी गोरा कर दे,
घर-घर की कहानी है,
चार दीवारी के भी भीतर।

मीलों की दूरी बनी हुई है,
अपनों से बिछड़कर मनुष्य,
गैरों से रिश्ता जोड़ता है,
यह कहाँ की समझ है भड़िया।

अपनों को जो तू छोड़ता है,
सर को उठाओ आँखें खोलो,
सोशल मीडिया से भी बाहर,
सुंदर-सा संसार है।

साक्षी जायसवाल
(बी. ए. प्रोग्राम)

परिवर्तन ही जीवन का आधार

परिवर्तन ही जीवन का आधार,
सोशल मीडिया उसी का प्रकार,
आधुनिक युग का एक नया आविष्कार,
जन-जन के जीवन को दे रहा नया आकार।

जनहित में हुआ ये जारी,
आज बन रहा है लत हमारी,
गलत, सही कुछ न देखो,
सोशल मीडिया पर लाइक ठोको।

मची अफरातफरी हर और,
टुईटर, इंस्टा, फेसबुक मचा रहे शोर,
दिन-रात ढलती है पोस्ट,
देखो किसके फॉलोवर्स मोस्ट।

सोशल मीडिया ने बदल दिया,
विश्व का आकार,
एक छोटे से गांव में सिमट गया संसार,
सोशल मीडिया ने किया, समाज में सुधार,
हर ओर हो रहा उन्नति का संसार।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से,
आमदनी में वृद्धि हुई,
गांव, शहर, कस्बा व देश,
रोजगार के लिए एकजुट हुए,
फेसबुक ने खोए हुए को मिलाया,
तो टुईटर ने मी टु मोमेंट चलाया।

हर किसी के हुनर को पहचान दिलाई,
सोशल मीडिया ने अपनी,
अलग जगह बनाई,
जोरों-शोरों पर हो रहा,
सोशल मीडिया उपयोग,
सोच-समझ कर करो उपयोग,
मत करो दुरुपयोग।

निक्की फैसल
(बी. कॉम. तृतीय वर्ष)

सोशल मीडिया भी देखो

सोशल मीडिया भी देखो, आज आसमाँ बना है,
फोन, लैपटॉप, टी०वी० रूप में छाया हुआ है,
रूप ट्वीट, इंस्टाग्राम, फेसबुक का लिया पड़ा है,
बच्चा बूढ़ा हर इंसान, फोन पर लगा पड़ा है।

जिन्दगी के अंग भंग, रंग में घुला पड़ा है,
सुबह पहला प्रणाम देखो, फोन को इसका हुआ है,
खाना सामने रखा है, व्यस्त फोन पर हुआ है,
त्याग घरबार भाई बन्धु, फोन पर लगा हुआ है।

सृष्टि का विकास है या, विनाश सृष्टि का हुआ है,
ये मानव आदि आज, उपकरणों का हुआ है,
रिश्ते-नाते प्यार मोहब्बत, आज ऑनलाइन हुआ है,
चिट्ठी लिखना पढ़ना-लिखना, सब लुप्त सा हुआ है।

ना 2G ना 3G ना 4G, फोन ये चाहता है,
आज तेरा खून देखो, 5G चिल्ला रहा है,
ना गूगल ना फेसबुक ना, ट्वीटर ये चाहता है,
ये अभागा बेटा तेरा ,टिक-टॉक लाइक चला रहा है।

ना डाक ना पोस्ट, ना प्रेम का संदेश देखो,
ना लेखनी ना स्याही, ना कलम कागज देखो,
ना अपने ना पराये, ना जीवन का ज्ञान इसको,
ये जीवन पथ पे अपने, ऑनलाइन ही चला जा रहा है।

ज्योत्स्ना
(बी. ए. प्रोग्राम द्वितीय वर्ष)

सोशल मीडिया में सिमटता जीवन

चल पड़ी है हर तरफ,
सोशल मीडिया की उड़ान,
खलबली है चारों तरफ,
मच रहा कोहराम।

सिमटा दिया इस दुनिया को,
सिमट गया जहान,
सिमट गया है बचपन सारा,
सिमट गये मेहमान।

आसमान में सन्नाटा छाया,
सूने पड़े मैदान,
'PUBG' के चक्कर में,
घर बैठे हैं इन्सान।

किताबों को भी दूर भगाया,
फेंक दिया खिलौनों को,
भूख प्यास का ख्याल नहीं,

चल रही है कैसी यहाँ,
'SHOW OFF' की सरकार,
क्योंकि बच्चा-बच्चा करता है,
सोशल मीडिया की पुकार।

'DP' राजा जी की जेल में,
सारी प्रजा कैद है,
रानी 'STATUS' के यहाँ,
भी चल पड़ी रेस है।

इस रेस में TIK-TOK,
आगे खड़ा इतरा रहा,
FACEBOOK को लात मार कर,
INSTAGRAM शर्मा रहा।

नौशाबा

(बी. ए. हिंदी ऑनर्स तृतीय वर्ष)



सेल्फी वाली लड़की

सेल्फी वाली लड़की,
सोच रही थी उस दिन मैं कि वो लड़की,
सिर्फ "selfie" में मुस्कुराती है?
न जाने भीतर ही,
उसे क्या कमी सताती है?

साथ खड़ी सखी मेरी,
मन ही मन में मुस्कुराती है,
साथ होकर मेरे भी किसी,
दूसरे से बतियाती है।

न रास्तों की अब खबर रही,
न खबर रही अब लोगों की,
"android phone" के सहारे क्योंकि,
जी रहा यहाँ हर कोई।

न भूख लगे अब, न प्यास,
उसे है भूख सिर्फ,
"cell phones" की।

देखा अक्सर मैंने यह कि..
चारों तरफ भीड़ में भी,
सब सेल्फी वाली लड़की,
की ही तरह मौन हैं।

पर देखो सोशल मीडिया पर,
अजीब कितना शोर है,
माँ के खाने को, भूलने लगे हैं सब
"SWIGGY, ZOMATO" से जो,
मंगवाने लगे हैं अब।

यह देख सच खड़ा पीछे,
थोड़ा हैरान है,
इस सोशल मीडिया के जीवन में,
हर कोई परेशान है।



नौशाबा
(बी. ए. हिंदी ऑनर्स तृतीय वर्ष)

यहाँ कोई अपना नहीं

यहाँ कोई अपना नहीं,
जहाँ अपनों का चेहरा याद नहीं,
जहाँ अक्सर परायों,
से होती बात रही।

मुद्दे के मुद्दे बदले जाते हैं यहाँ,
हर दिन एक नया किस्सा है यहाँ,
कभी भटकता हुआ इस ओर,
तो कभी भटकता हुआ उस ओर।

चलता है यह जहाँ,
लालच का भंडार है यहाँ,
हर दिन एक नया संसार है यहाँ।

कभी फेसबुक तो कभी,
ट्विटर की है माया,
हर दिन एक नया,
बहकावा है आया।

शुरुआत 'मैसेज' और 'स्टेटस' के,
अपडेट से होती है,
और रात 'चिट-चैट',
में बीता करती है।

अब बीमार होने पर दवाई कम,
लाइक और कमेंट असर होते हैं,
बात-बात पर वाह यहाँ,
ऑनलाइन बँटती है मिठाई।

नौशाबा
(बी. ए. हिंदी ऑनर्स तृतीय वर्ष)

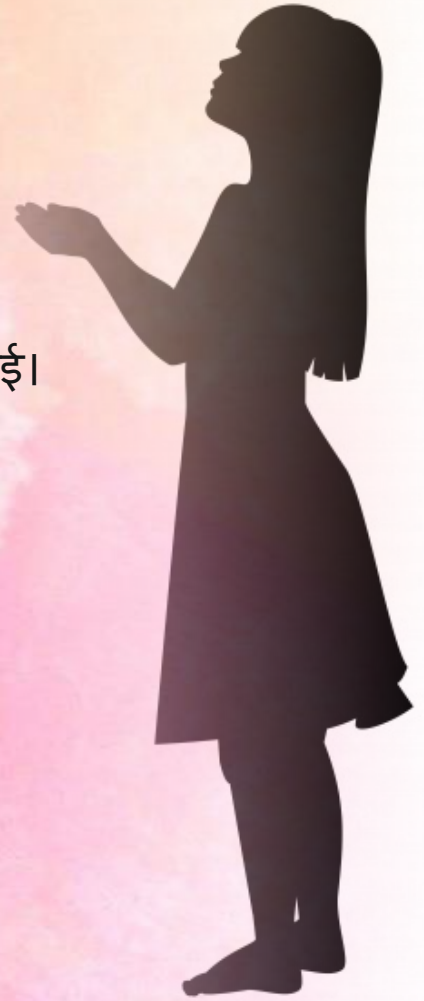
काश! आसमान का एक कोना होता

काश! आसमान का एक कोना होता,
घर में किसी का रोना ना होता,
खुशी से व्यतीत करते जीवन हम अपना,
अगर कब्र में हमें सोना न होता।

आसमानों ने कर ली है सितारों से लड़ाई,
हमने भी है खुद की किस्मत आजमाई,
पर हद तो तब हुई ज़िन्दगी की,
जब हमने की वफ़ा और उन्होंने की बेवफ़ाई।

छोटी सी पगडंडी है,
चलने में है बड़ा साहस,
पर मेरे छोटे हैं कदम ,
ख्वाहिशें हैं हजार।

पूजा
(बी. ए. हिंदी ऑनर्स तृतीय वर्ष)



जिस व्यक्ति ने गलती नहीं की उसने कभी नया करने की कोशिश नहीं की।
- अल्बर्ट आइंस्टीन

हार को जीत बनाना होगा

उठ खड़ी हो,
चल एक कोशिश और करते हैं,
जिस काम में असफल हुए हैं,
उसे एक बार फिर करते हैं।

बुलंद कर ले फिर इन हौसलों को,
मिटा दे जीत और तेरे बीच के फासले को,
एक और जीत लिख दे आज तेरे नाम,
हो गर्व तेरे माँ बाप को, कर दे कुछ ऐसा काम।

रास्ता पत्थरों से नहीं, काँटों से भरा होगा,
मगर हर समुन्दर के बाद जीत का,
किनारा ज़रूर होगा,
पीछे मुड़ने की वजह कई होंगी,
दो पल रुकने की जगह कई होंगी।

मगर एक वादा अब तुझे खुद से करना है,
न रुकना है, न मुड़ना है,
बस अब हिम्मत कर आगे बढ़ना है,
तुझे आज हार को भी हार के दिखाना है...

तुझे आज मुकद्दर को भी,
बदल कर दिखाना होगा,
हाँ, तुझे तेरी हार को जीत बनाना होगा,
आज बस जीत कर दिखाना होगा...

अंजलि कपूर
(कंप्यूटर साइंस ऑनर्स तृतीय वर्ष)

बुद्धि

ईश्वर की अनुपम देन है बुद्धि,
करती है आत्मा की शुद्धि।

बुद्धि प्राणियों को भेद करना सिखाती है,
जीवन के उत्तम पहलुओं का ज्ञान सिखलाती है,
उपयोग से बनती है यह जीवन की माला,
दुरुपयोग से बन जाती है बुराइयों की ज्वाला।

कुशाग्र बुद्धि से बन जाए जीवन स्वर्ग,
और समाप्त हो जाएँ जीवन के सब अनर्थ।

अंजलि आर्य
(बी.ए. हिंदी ऑनर्स तृतीय वर्ष)

तुम्हें कोई पढ़ा नहीं सकता, कोई आध्यात्मिक नहीं बना सकता।
तुम्हें सब कुछ अंदर से सीखना है। आत्मा से अच्छा कोई शिक्षक नहीं है।
- स्वामी विवेकानंद

दिल मेरा रोता है

कभी कभी दिल मेरा रोता है,
की ऐसा क्यों होता है,
दोस्ती में दोस्त खुदा होता है,
जब दोस्त दोस्त से जुड़ा होता है।

तो दिल में इतना दर्द होता है,
इसलिए दिल रोता है,
मुसलमान, ईसाई, और हिन्दू में,
इतना भेद क्यों होता है?

वही दो आँखें, वही दो हाथ और वही दो पैर हैं,
तो फिर आपस में क्यों इतना बैर है,
इसलिए दिल मेरा रोता है।

क्या परिवार अपने अपनों का ही होता है,
सच्चा परिवार वह होता है जो अनेक,
धर्मों का समूह होता है।



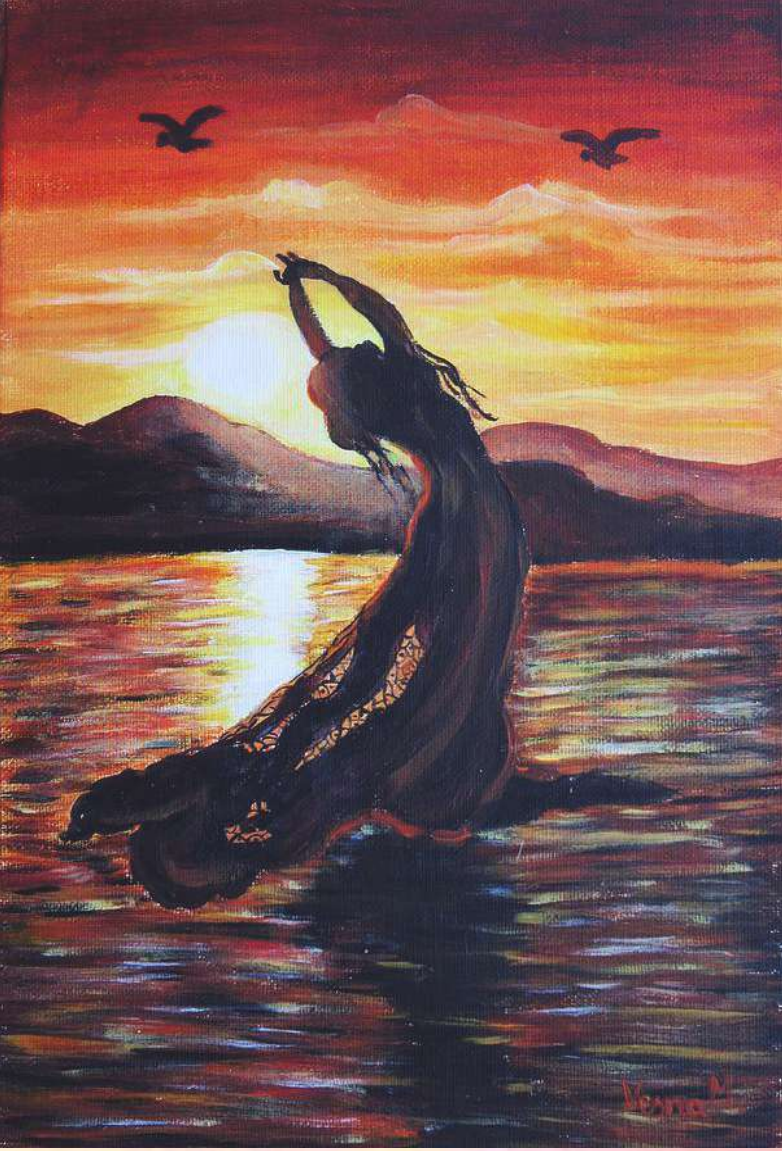
जैसे भारत में अनेकता में एकता है,
सच्चा परिवार वही होता है जिसमें भाई हिन्दू,
बहन ईसाई और बाप मुसलमान होता है,
माँ जैन, दादी जैन और दादा सिख होता है।

लेकिन ये सब अब कहाँ होता है,
इसलिए दिल मेरा रोता है।

गायत्री प्रजापति
(बी.ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष)

सपने वो नहीं हैं जो आप नींद में देखें सपने वो हैं जो आपको नींद ही नहीं आने दें।
-ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

जब सारी चिंता भुला रही



भोर में निंदिया उड़ी,
तो भांति भांति के गुंजन,
मन को जैसे गुंझार गए,
बालारुण भी मानो,
चंचल किरणे बरसा गए।

बादल भी घुमड़-घुमड़कर,
आकाश गंगा बरसा रहे,
जहाँ मिटटी की भीनी सुगंध,
सारी चिंता भुला रही...

गायत्री प्रजापति
(बी.ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष)

शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है।
- चाणक्य

वह सुबह कभी तो आएगी

आज की सुबह कुछ खास थी पता नहीं क्यों? पर एक अलग तरह का एहसास था मन में। शायद इसलिए कि आज मेरी नौकरी का पहला दिन था। जो सपने हम बचपन से देखते हैं, अपने लक्ष्य को हासिल करने का सपना वह आज पूरा हो रहा था। अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद बहुत संघर्षों को पार करते हुए मुझे कॉलेज में पढ़ाने का अवसर मिल गया था। यह मेरे बचपन का सपना था कि मैं बड़ी होकर टीचर बनूँ। बचपन तक तो केवल यह एक जोश था, यूँ कहें बचपन था, पर धीरे-धीरे उम्र बढ़ने के साथ-साथ मेरे सपने और मजबूत होते गए और तमाम संघर्षों के बाद मैंने कॉलेज में नौकरी प्राप्त कर ली। मुझे पढ़ाना बहुत अच्छा लगता है, मैं अपने ज्ञान विचार को केवल अपने तक ही सीमित नहीं रखना चाहती। खैर आज मेरा सपना साकार हो गया।

सुबह की शुरुआत लगभग सामान्य दिनों से काफी अलग थी। एक नई उमंग, एक नया जोश सब थे मेरे अंदर। मैं खूब उत्साहित होकर कॉलेज के लिए तैयार हो रही थी, मैंने नाश्ता किया, तैयार होकर मैं थोड़ी देर के लिए अखबार लेकर पढ़ने के लिए बैठी क्योंकि मैं समय से काफी पहले ही तैयार हो गई थी। मैंने जैसे ही अखबार का पहला पन्ना खोला तो मेरी आँखों के सामने एक ऐसी घटना थी जिससे सुबह तक का मेरा सारा जोश उत्साह पल भर में गायब हो गया। जिसे मैं एक अलग खुशी से भरी हुआ सुबह मान रही थी, वह सुबह वैसी नहीं थी। मैं बस घटना पढ़ने ही वाली थी कि मां की आवाज़ मेरे कानों में गूँजी।

मां - "तैयार हो गई स्नेहा?"

मैं- "हां मां बस निकल ही रही हूँ थोड़ी देर में"

मां- "क्या बात है बेटा सुबह से तो इतनी खुश थी अब क्या हो गया। अरे आज तो तेरी जिंदगी का सबसे खुशी का दिन है। जो तू चाहती थी वह बन गई मेरी बच्ची।"

मैं-"हां मां" (आवाज़ में उदासी साफ झलक रही थी) यह सुनकर मां मेरे पास आईं। मेरे पास बैठकर उन्होंने पूछा - "चल बता क्या बात हो गई?"

ना चाहते हुए भी मां को बताया क्योंकि जब बच्चे सफल हो जाते हैं तो सबसे खुश उनके माता-पिता ही होते हैं। इसलिए मैं मां को उदास नहीं करना चाहती थी पर मैं मां से कुछ छुपाना भी नहीं चाहती थी। इसलिए मैंने मां से कहा- “मां कल रात एक लड़की का रेप करके उसे जिंदा जला दिया गया”

यह बोलने के साथ-साथ मेरी आंखों में उदासी के साथ आसूँ भी थे। मां ने कहा- “अरे बेटा यह घटना तो रोज की है आए दिन ऐसी घटनाएं तो होती ही रहती हैं और कहीं न कहीं उस लड़की की भी गलती होगी।

मां के यह शब्द सुनते ही जैसे मैं बिल्कुल चुप हो गई। मेरे अंदर एक बिजली कौंधी क्योंकि मुझे मां से इस तरह के बातों की उम्मीद नहीं थी। मैंने कहा-“मां आप क्या बोल रही हो एक लड़की का रेप हुआ उसे जिंदा जला दिया गया और आप कह रहे हो उसमें लड़की की गलती है।”

मां- “हां तो और नहीं तो क्या लड़कियों को इतनी देर तक बाहर रहने की क्या जरूरत है और हां मुझे ज्यादा ज्ञान ना दे। जा जल्दी कॉलेज का पहला दिन है, देर हो जाएगी।”

मैंने मां से कुछ कहा तो नहीं पर एक बहुत दुख और दमन में दर्द को लेकर मां के पैर छूकर मैं कॉलेज के लिए रवाना हुई।

मैं बस स्टॉप पर पहुंची और मैं बस का इंतजार ही कर रही थी कि इतने में जो हुआ उसे मेरी आंखों ने मानने से मना कर दिया। मेरे साथ ही बस स्टॉप पर एक १५-१६ साल की लड़की खड़ी थी जो स्कूल जाने के लिए बस का इंतजार कर रही थी। इतने में बाइक सवार दो लड़के आए और पीछे बैठे २०-२५ साल के लड़के ने उस लड़की के ऊपर तेजाब फेंक दिया। वह लड़की तड़प रही थी। वहां खड़े किसी ने भी उसकी मदद नहीं की। मेरी बस आ चुकी थी पर मैंने अपने पैर पीछे खींच लिए।

बस जा चुकी थी। मैं उस लड़की के पास गई और मैंने उसके ऊपर पानी डाला। मुझे देखकर कुछ और लोग आकर लड़की की मदद करने लगे। मैंने लोगों की मदद से उसे उठाया और अस्पताल लेकर गई।

जब उस लड़की को होश आया तो पता चला कि उसका नाम मानसी है। वह दसवीं कक्षा में पढ़ती है। बहुत दिनों से एक रोहित नाम का लड़का उसे शादी करने के लिए जबरदस्ती कर रहा था। पर उसने मना कर दिया और एक दिन लड़के के बहुत परेशान करने पर मानसी ने उसे थप्पड़ मार दिया और इसी बात से गुस्साए रोहित ने उस पर तेजाब फेंक दिया।

मानसी कि यह बात सुनते ही मेरी रूह कांप गई। एक तरफ मैं थी जिसे आज अपने सपने को पूरा करने का मौका मिल रहा था और दूसरी तरफ मानसी जिसके सपने पूरे होने से पहले ही उसे खत्म कर दिया गया। मैंने अब इन घटनाओं से एक दृढ़ निश्चय कर लिया था कि मैं अब उनके सपने के लिए लड़ूंगी जिनको मेरी आवश्यकता है।

एक असली सुबह तो तब होगी जब ऐसी घटनाएं नहीं होंगी ना तो हमारे आसपास और ना ही अखबारों में। जब तक ऐसी घटनाएं होती रहेंगी तब तक सुबह ही नहीं हो सकती। लोगों की मानसिकता बदलने, लड़कियों पर कोई भी अत्याचार ना होने पर ही इस देश में सुबह होगी और मुझे उम्मीद है कि- "वह सुबह कभी तो आएगी"

नेहा पॉल
(बी.ए. हिंदी ऑनर्स तृतीय वर्ष)

आधी रात बीत चुकी थी पर सिया की आंखों में नींद ने अब तक कोई दस्तक नहीं दी थी। करीब आधे घंटे बाद कब नींद आई है उसे पता भी न चला। फिर जब आंख खुली तो सुबह के 8:00 बजे थे। दादी की आवाज कमरे की दीवारों को चीरती हुई सीधे सिया के कानों में जा रही थी। "कोई समय पर नहीं जागता, किसी को समय की कीमत नहीं पता।"

दादी का यह कथन सुनते ही सिया ने जाग जाना ही उचित समझा। आज घर के सभी स्त्री-पुरुष प्रतिदिन की तुलना में ज्यादा स्फूर्ति से कामों में लगे हुए थे। सिया ने इस "स्फूर्ति" का राज जानना चाहा। मैं अपनी प्रिय दीदी के पास जाकर ढेर सारे सवाल पूछना चाहती थी क्योंकि उसे ऐसा लगता था कि उसकी जिज्ञासा तथा प्रश्नों को प्रिया के अलावा कोई नहीं समझ सकता है। कुछ गीत गुनगुनाते हुए वह प्रिया के पास गई और बोली "प्रियु, क्या आपको पता है कि आज किस उत्सव की तैयारियों में पूरा घर व्यस्त है?"

प्रिया बोली " आज कोई उत्सव नहीं है कल काशी वाली बुआ जी आने वाली है। फूफा जी, पिकी और सोनू भी आएंगे।"

"ओह! अच्छा तो यह बात है।" प्रिया के उत्तर से संतुष्ट होकर सिया बोली।

आज तो दादी भी कामों में लगी हुई थी कल उनकी लाडली बेटी जो आ रही थी। खुश होकर आज अपनी लाडली बेटी के बचपन के किस्से सुना रही थी। वह बात अलग थी कि प्रिया के अलावा घर के और किसी सदस्य को उसमें कोई रुचि नहीं थी। यह पहले ही निर्धारित हो चुका था कि आज खाने के बाद सभी जल्दी सो जाएंगे।

शाम को सभी खाने की मेज पर आ चुके थे और प्रिया रोज की तरह आज भी साथ बैठी थी। मेज पर नजरें घुमाते हुए सिया बोली, - "मम्मी बेसन के लड्डू भी तो बनाए थे आपने वह मेज पर क्यों नहीं रखें?" इससे पहले कि मां कुछ कह पाती दादी बोली , "लड्डू केवल मनोरमा के लिए बने हैं और किसी के लिए नहीं।" दादी की बात सुनकर सिया समझ चुकी थी कि जब तक बुआ जी लड्डू नहीं

खाएंगे तब तक उसे भी नसीब नहीं होंगे। पर बुआ जी तो सुबह आएंगे और आते ही लड्डू तो नहीं खाएंगे। इन विचारों की उधेड़बुन में सिया मग्न हो गई।

सभी खाना खाकर अपने अपने कमरों में चले गए। प्रिया और सिया भी अपने कमरे में जाकर बातों में लग गई। प्रिया सिया की बड़ी मम्मी की बेटी थी पर दोनों में सगी बहनों जैसा प्रेम था।

अचानक बातें करते-करते प्रिया बोली, "सियु, लड्डू खाएगी?" यह सुनकर सिया की आंखें चमक उठी वह बोली, "पर दादी ने तो.....।"

प्रिया बोली, "जानती हूं दादी ने मना किया है। पर इतने सारे लड्डुओं में से ५-६ कम हो जाएंगे तो किसी को भी पता नहीं चलेगा।" सिया ने हाँ में हाँ मिलाई।

दोनों ने सभी के सोने तक इंतजार किया। जैसी लगा कि शायद अब सब सो चुके हैं दोनों सीढ़ियों से दबे पांव नीचे उतरी। बिना किसी शोर के दोनों रसोई घर की तरफ बढ़ी। प्रिया बोली, "मैं अंदर जाकर लड्डू लेकर आती हूं तब तक तुम यहीं खड़ी होकर देखती रहना कि कोई आ तो नहीं रहा है।" सिया ने हाँ में सिर हिलाते हुए कहा, "ठीक है! मेरे लिए तीन लाना।"

प्रिया रसोई घर में दाखिल हुई। योजना अनुसार लड्डू चोरी हो चुके थे। दोनों बहने अपने कमरे में बैठकर लड्डुओं का आनंद लेने लगी।

अगली सुबह की किरण घर में दाखिल हो चुकी थी। उस किरण के प्रवेश मात्र से घर चमक उठा था। दादी पूजा-पाठ में व्यस्त थी। रसोई घर से कुछ तलने की महक आ रही थी। सिया के पिता और बड़े बाबा स्टेशन जाने की तैयारी कर रहे थे। बुआ जी के पधारने में मात्र 1 घंटा शेष था। घर में हलचल बढ़ती जा रही थी।

कुछ देर बाद घर के बाहर गाड़ी के रुकने की आवाज सुनाई दी। सिया के पिता ने घर के भीतर आकर कहा "मां मन्नू आ गई है।" इतना सुनते ही दादी की का ठिकाना खुशीनहीं रहा। दौड़ का के प्रवेश द्वार तक आ पहुंची। अपनी मनोरमा को गले लगा कर रोने लगी।

प्रिया और सिया मूर्ति बने यह दृश्य देख रही थी। बुआ जी, फूफा जी, पिंगी और सोनू की आरती उतारी गई। नाश्ते के लिए सभी मेज पर आ चुके थे। पापा, बड़े पापा, दादी, बुआ जी, फूफा जी, पिंगी, सोनू, सिया और प्रिया सभी अपनी-अपनी जगहों पर बैठ चुके थे। अचानक सिया बोली, "मम्मी आप भी बैठो।"

सवाल तो प्रिया के मन में भी उठ रहा था कि आज मम्मी हमारे साथ क्यों नहीं बैठी पर वह कुछ बोल ना सकी। यह अंतर था 16 तथा 20 वर्ष की उम्र का।

सिया का कथन सुनकर दादी बोल उठी "तू चुपचाप नाश्ता कर नहीं तो अपने कमरे में जा।" दादी की बात सुनकर सिया बोली, "मैंने तो बस.....।" दादी ने किसी और की बात काटते हुए बोला, "तूने सुना नहीं कि मैंने क्या कहा। बहुत बातें करने लगी है तू। कल रात भी खाना खाते समय बोलना शुरू कर दिया था पहले बुआ जी नाश्ता कर ले मम्मी तो बाद में भी खा लेंगी।"

इस बार सिया के बाद कोई नहीं काट सका बिना किसी डर के वह बोली "दादी मैंने कुछ गलत नहीं कहा है। और अगर आपको बुआ जी इतनी ही प्यारी थी तो आपने उन्हें अपने से दूर क्यों भेजा।"

सिया के बात में दम तो था पर वह किस हद तक सही थी इसका अनुमान लगाना सभी के लिए मुश्किल था। वह 1 दिन ऐसा था जब दादी से किसी ने ऐसा प्रश्न किया है जिसका उत्तर वह देना नहीं चाहती थी। शायद उस प्रश्न का उत्तर क्या था यह ज्ञात ही नहीं था बस वह 1 दिन याद रह गया।

"रिश्ते दूरी से और भी मीठे होते हैं पर निकम्मी दूरी आती ही क्यों है? यह एक प्रश्न है।"

सनोवर चौरसिया
(बी. कॉम. तृतीय वर्ष)

मेरी बेंगलुरु यात्रा

कॉलेज की छुट्टियाँ शुरू हुई थीं, इसलिए पिताजी ने बेंगलुरु जाने की योजना बनाई। सब हवाई यात्रा के पक्ष में थे। केवल मैं चाहती थी कि सफर को रंगीन बनाने के लिए ट्रेन से जाना बेहतर होगा पैकिंग हो जाने के साथ फिर सफर शुरू हुआ। ट्रेन में अक्सर ही मैं जाया करती हूँ और ट्रेन का सफर मुझे बहुत पसंद है। मेरी ज़रूरी चीज़ें, मेरी डायरी, कलम, मेरा कैमरा और मेरा फोन मेरी अहम चीज़ें मैंने अपने साथ रखी थीं ।

ट्रेन का सफर 2 दिन का था सोचकर अजीब तो लगा था कि ट्रेन में सोना, खाना-पीना , और 2 दिन तक रहना आसान नहीं होगा ।लेकिन मैं नहीं जानती थी कि सफर इतना खूबसूरत होगा। सफर शुरू हुआ ।ट्रेन तेज़ गति से चल रही थी। खिड़की से ठंडी हवा आ रही थी ।हल्की बारिश की बूंदें मेरे चेहरे पर गिर रही थी।

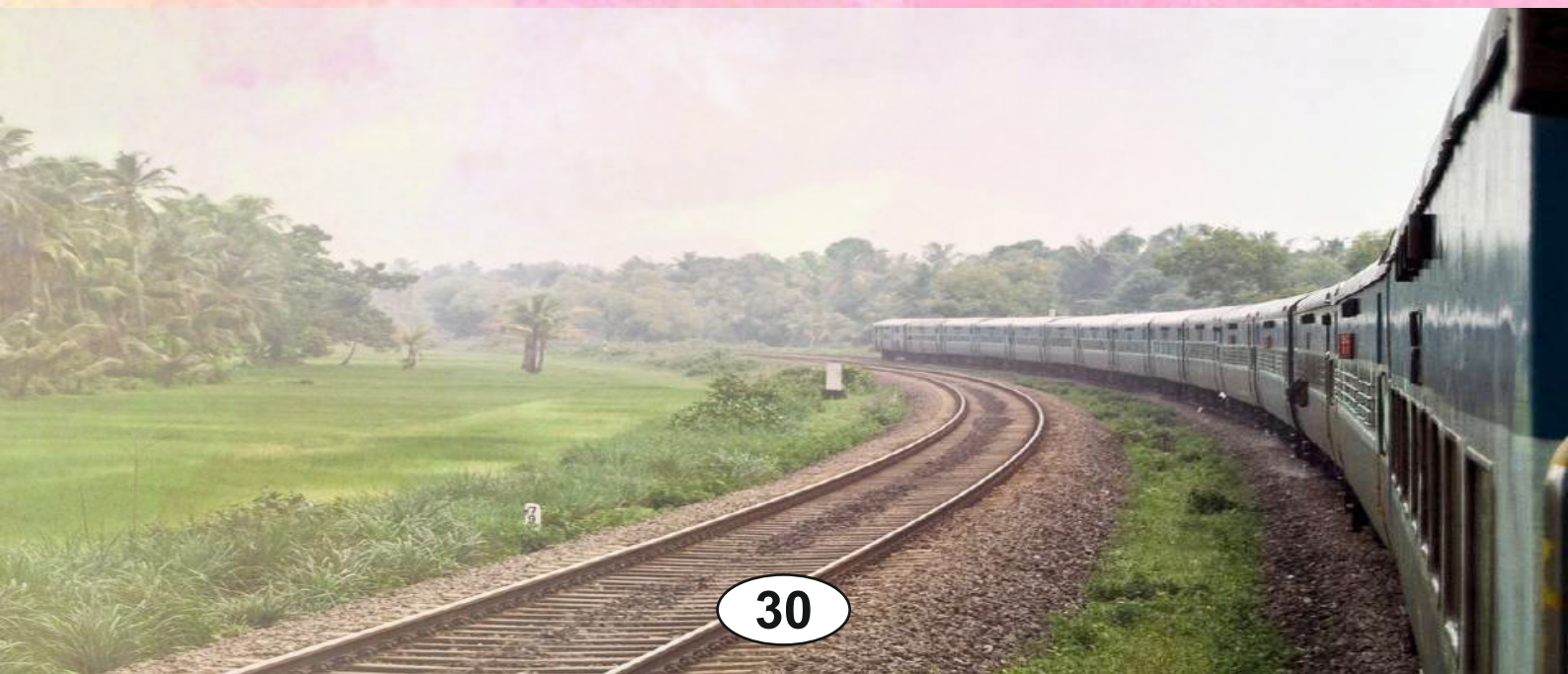
सभी अपने-अपने स्थान पर थे फिर किसी स्टेशन पर जाकर ट्रेन रुकी। वही चाय और पकौड़े की आवाज़, वही शोरगुल, लोगों की भीड़ का आना-जाना और मौसम की ठंडक धीमे धीमे बारिश और गर्म चाय। सफर को रंगीन बनाने में कोई कमी नहीं थी। मैं और मेरे भाई ने मनोरंजन के लिए कई प्रकार के खेल खेले कभी हम अंताक्षरी खेलते तो कभी लूडो तो कभी चैस ।जब दोनों थक जाते तो थोड़ी देर के लिए सुस्ता लेते थे। वह अपने साथ अपनी कहानियों वाली किताब लाया था। कभी वह पढ़ कर मुझे सुनाता था तो कभी मैं उसे पढ़कर सुनाती।

अब रात हो चुकी थी रात के १:०० बजे थे। ट्रेन की सब लाइट बंद हो चुकी थीं। ठंड बढ़ गई थी और ट्रेन के सभी यात्री शांति से सो गए थे। केवल कोई जाग रहा था वह थी मैं। मैं अपना अनुभव अपनी डायरी के पन्नों पर उकेरना चाहती थी । थोड़े समय बाद, मैं भी सो गई वह हिलता हुआ बेड आज भी याद आता है। पूरी रात का वह अनुभव मेरी ज़िंदगी का एक अहम हिस्सा है।

सुबह हुई हमेशा की तरह मैं जल्दी उठ गई। देखा ट्रेन में सब लाइन लगाकर हाथ मुँह-धोने के लिए खड़े थे। मौसम कुछ गर्म मेहसूस हुआ। नाश्ते के लिए ट्रेन में कई लोग आए क्योंकि हम दक्षिण की ओर जा रहे थे तो कभी कोई उपमा तो कोई वड़ा तो कोई इडली सांभर की आवाज़ लगा रहा था हमने उसी से नाश्ता किया। हमारे सामने बैठे बाकी यात्री भी ऐसे ही गीत गाते गुनगुनाते खेलते, बातें करते जा रहे थे। मेरी एक लड़की से दोस्ती भी हुई। हमने बहुत सारी बातें कीं। जैसे-जैसे मंज़िल करीब आ रही थी, सफर छोटा होता जा रहा था और मेरी बेचैनी बढ़ रही थी मैं चाहती थी वह सब चलता रहे। लेकिन मंज़िल पर पहुंचना भी था।

ऐसे ही 2 दिन बीत गए और हम कब बेंगलुरु पहुंच गए, पता ही नहीं चला। सफर मंज़िल से भी खूबसूरत हो गया था।

नौशाबा
(बी.ए. हिन्दी ऑनर्स तृतीय वर्ष)



सना को बारहवीं कक्षा में प्रथम आने पर पिताजी से मोबाइल उपहार में मिला। वह खुश थी। उसने कॉलेज में एडमिशन लिया। रमा और सना कॉलेज के पहले दिन ही मित्र बन गए थे सना का सुंदर चेहरा, कोमल हृदय और मीठी सी बोली ने कक्षा के सभी छात्राओं को अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। उसका मजाकिया अंदाज और वह कैटीन का साथ खाना ही वजह था उनकी दोस्ती का।

सना की हर बात अच्छी थी लेकिन रमा को उसका मोबाइल ज्यादा इस्तेमाल करना खटकता था। वह हमेशा रमा की जगह उसके अन्य मित्र अजय से बात अधिक करती थी। अजय और वह विद्यालय में साथ पढ़ते थे। लेकिन तब मित्र नहीं थे, मोबाइल के माध्यम से उनकी मित्रता गहरी हुई।

कुछ समय बाद कुछ यूं हुआ कि सना के लिए अजय ने विवाह का प्रस्ताव रखा। सना क्योंकि अजय को अपना केवल अच्छा मित्र मानती थी। उसने प्रस्ताव से इंकार कर दिया। अजय भी पीछे हट गया था। लेकिन एक दिन कुछ अलग हुआ सना को फेसबुक पर फेक आईडी से किसी का मैसेज आया और वह उसको परेशान करने लगा। सना ने नजरअंदाज किया। लेकिन वह उसे अब हर दिन ही परेशान करने लगा था। कभी वह उसे अननोन नंबर से कॉल करता तो कभी उसे कुछ कहता।

सना और रमा समझ नहीं पा रहे थे कि ऐसा कौन कर रहा है और क्यों कर रहा है। वह व्यक्ति सना को धमकाने लगा जैसे-जैसे दिन बीतते गए सना अब उससे डरने लगी थी। सना जो हर वक्त खिलखिलाती- सी लड़की थी। वह अक्सर परेशान रहने लगी थी। ऐसा रमा ने उसे कभी नहीं देखा था। लेकिन रमा भी नहीं समझ पा रही थी कि वह कैसे इस समस्या का हल निकाले।

बात हर दिन बढ़ती जा रही थी। वह सना पर हावी होता जा रहा था। सना ने बहुत

कोशिश की पता लगाने की वह कौन है। उसने हर प्रयत्न किए लेकिन कुछ नहीं हुआ। उसने कभी अपना नंबर बदल दिया तो उसे कभी नजरअंदाज कर दिया। अब वह फोन भी कम चलाने लगी थी और हर समय डरा हुआ महसूस करती थी। वह यह सोचती थी कि ना जाने कब कौन उसे हानि पहुंचा देगा। उसने सोचा था कि वह समस्या का हल खुद निकाल लेगी इसलिए उसने अपने माता-पिता को बताना जरूरी नहीं समझा। लेकिन उस व्यक्ति का हर दिन एक बुरा रूप नज़र आने लगा था। वह सना कि फोटो को कभी माध्यम बनाता था। तो कभी मिलने के लिए उसको जोर देता था। तो कभी अपशब्द कहता। वह मासूम और खेलती लड़की अब खामोश रहने लगी थी।

वह केवल फोटो में ही मुस्कुराती थी। अक्सर खोई खोई रहती थी वह पहले की तरह रमा से बात भी नहीं करती थी। वह अब रमा के हर छोटे मजाक पर क्रोधित हो उठती तो कभी अचानक रौने लगती थी। उसका यह असहज रूप रमा को हर दिन चिंतित करता जा रहा था। इस परिस्थिति को 6 महीने हो गए थे लेकिन तब भी सब वैसे ही चलता रहा था। कुछ बदलाव नहीं आया था।

सना रमा और अजय से ही अपनी हर बात कहती थी और अजय भी उसका पूरा साथ देता था। सना कि मानसिक हालत ठीक नहीं थी। वह खुद को बीमार महसूस करने लगी थी। खुद को हमेशा कमरे में बंद रखती थी। रमा से भी उसकी बातें कम होने लगी थी।

एक दिन रमा ने अजय की मदद से इस समस्या का हल निकालने का निर्णय लिया। इसी कारण से वह अजय से मिलने गई अजय बाहर गया था। इसलिए उसने प्रतीक्षा करनी उचित समझा। तभी रमा ने कुछ देखा कि वह परेशान हो उठी। क्योंकि वह जान गई थी कि सना को परेशान करने वाला व्यक्ति और कोई नहीं था। वह अजय ही था। रमा उस समय सोचती रह गई कि एक मोबाइल फोन ने एक हस्ती खेलती लड़की की हँसी को छीन लिया था उसे खामोश कर दिया था।

नौशाबा

(बी.ए. हिन्दी ऑनर्स तृतीय वर्ष)

भारतीय सभ्यता पर मीडिया का प्रभाव

मीडिया एक ऐसा सशक्त साधन है जो समाज को जागरूक करने की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। कुछ समय पहले तक मीडिया की पहुंच बहुत सीमित होती थी। उस पर वही विचार सुनने समझने को मिलते थे जो या तो सरकार अथवा समाज का विशेष वर्ग समाज तक पहुंचाना चाहते थे लेकिन २१सदी के आधुनिक समाज में स्थितियां काफी परिवर्तित हो चुकी हैं। सामाजिक मीडिया की पहुंच समाज के प्रत्येक वर्ग के मस्तिष्क तक है। कई बार तो व्यक्ति की राय का केंद्र बिंदु सामाजिक मीडिया पर प्रसारित विचार होते हैं।

मीडिया का कार्य समाज के विभिन्न वर्गों को समाचार , गपशप, फैशन तथा आधुनिक तकनीक के विषयों से अवगत कराना है। मीडिया से ही देश-विदेश में होने वाली गतिविधियों का पता चलता है। मीडिया को समाज का आईना भी कहा जाता है।

मीडिया का आधुनिक समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि मीडिया ही समाज को विभिन्न वर्गों व विभिन्न स्तरों पर होने वाली राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विविधताओं से अवगत कराता है। परंतु दुर्भाग्यवश आधुनिक मीडिया अपनी सकारात्मक भूमिका को पीछे छोड़ कर विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों से प्रेरित होकर नकारात्मक भूमिका निभा रहा है। मीडिया का नौजवानों व बच्चों पर अत्यधिक प्रभाव होने के कारण वे लोग मीडिया द्वारा प्रचारित व प्रसारित की गई सूचनाओं से तुरंत व काफी गंभीरता से प्रभावित होते हैं। उदाहरण स्वरूप कई प्रकार के वीडियो गेम्स जो इंटरनेट तथा सामाजिक मीडिया के माध्यम से खेले जाते हैं, उनका नौजवानों तथा बच्चों पर अत्यधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वे मीडिया द्वारा दर्शाए गए कार्य करने के लिए धन तथा कई कई बार जान तक गंवा देते हैं।

मीडिया पर दिखाए जाने वाले विज्ञापन अत्यधिक मार्मिक होते हैं। अनेक प्रकार के जुर्म की शुरुआत मीडिया द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों से प्रेरित होकर की जाती है।

मीडिया चलाने वाले लोग तथा मीडिया के माध्यम से सूचनाएं प्रसारित करने वाले लोग समाज के लोगों के दिमाग के साथ खेलने लगते हैं।

मीडिया को राजनैतिक तंत्र प्रहरी बताया गया है परंतु आधुनिक मीडिया का प्रयोग राजनैतिक वर्ग अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए करते हैं मीडिया के जाल कई प्रकार से हैं :-

(१) प्रिंट मीडिया (२) टेलीविजन मीडिया (३) आधुनिक तकनीकी गैजेट्स जैसे मोबाइल फोन । इन सब मीडिया के प्रकारों से मिलकर समाज में एक नशे की सी हालत पैदा कर दी है क्योंकि समाज का प्रत्येक वर्ग खासतौर पर बच्चे व युवा वर्ग वही करना, पहनना व सोचना चाहते हैं जैसे मीडिया उनसे करवाना चाहता है जैसे टैटू बनवाना एक फैशन बन गया है।

आधुनिक युग में सब वर्गों के लोग खासतौर पर युवा वर्ग फेसबुक पर, ट्विटर पर और अन्य सामाजिक साइट्स पर मशहूर होने के लिए अपनी निजी जानकारी व फोटो भेजते रहते हैं। जिसका बहुत बड़ा खामियाजा भुगतना पड़ता है। इसी प्रकार व्हाट्सएप के माध्यम से कई बार अनेक प्रकार की झूठी संवेदनशील सूचनाएं भेजी जाती हैं जिससे व्यक्ति आतंकित हो जाते हैं।

लोकतंत्र में सरकार, कोर्ट तथा मीडिया लोकतंत्र की चौथी आधारशिला है जिसका प्रयोग अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए किया जाना उपेक्षित है। वेद तथा उपनिषद् के समय से मीडिया का प्रयोग समाज को ऊपर उठाने के लिए किया गया है। परंतु आज जब मीडिया इतना सशक्त हो गया है 50,000 के आसपास अखबार निकाले जाते हैं अनेक प्रकार के टीवी व रेडियो चैनल हैं। जिनका प्रयोग समाज को सशक्त करने के तरफ कम, बल्कि नकारात्मकता फैलाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगी की यह मीडिया के उपयोग करने वाले के हाथ में है कि मीडिया के सकारात्मक पहलू को ध्यान में रखते हुए उससे लाभ लें अथवा मीडिया के नकारात्मक पहलू को ध्यान में रखते हुए अपना तथा समाज के संसाधनों के दुरुपयोग में सहायक बने।

सोशल मीडिया

घर बैठे जो दुनिया दिखाए
दूर भी रखे पास भी लाए
बूझो कौन?

सोशल मीडिया!!!

दोस्तों अपनी गलती दूसरों के गले करने की कला में जैसी महारत मनुष्य को हासिल है वैसी शायद ही इस संसार में किसी अन्य प्राणी को हो। बात चाहे व्यक्तिगत संबंधों की हो, प्रकृति तथा अन्य जीव-जंतुओं के साथ संबंध की हो अथवा

विज्ञान और तकनीक के साथ कि। मनुष्य हैरान-परेशान, सिर धुनता और दूसरों को दोष देता ही नजर आता है। वर्तमान समय में अपने तमाम अकेलेपन, बढ़ती असहिष्णुता, छोटी उम्र में आंखों पर चढ़ते चश्मे, फैलते शरीर, संबंधों से खत्म होती ऊष्मा - सबका ठीकरा सोशल मीडिया के सर फोड़ दिया गया है। पर क्या यह पूरी तरह सच है? क्या हमारी स्वार्थपरता, दूरदर्शिता, आरामपरस्ती और दंभ का इसमें कोई हाथ नहीं?

आधुनिक जीवन शैली का दबाव, आवश्यक चूहा दौड़, गांव और कस्बों से शहरों की तरफ और शहरों से महानगरों और फिर विदेशों की ओर बढ़ते लोग, एक-एक बच्चे वाले एकल परिवार - तमाम कारण हैं जिनके चलते संबंधों में ठंडा पानी और जीवन में अकेलापन और तनाव बढ़ता जा रहा है। संपूर्ण परिदृश्य को यदि ध्यान से देखा जाए तो मुझे तो सोशल मीडिया (फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, व्हाट्सएप) की भूमिका सकारात्मक ही नजर आती है। स्कूल से कॉलेज और फिर नौकरी और गृहस्थी के सफर में बहुत सारे नए दोस्त बने और बहुत से छूट भी गए। जिन लोगों से दोबारा जुड़ने और मिलने की इच्छा थी उन तमाम दोस्तों और दूरदराज के रिश्तेदारों को मैंने फेसबुक के जरिए ही पाया। सुदूर विदेश में रह रहे संबंधियों, मित्रों, पढ़ रहे बच्चों से लगातार जुड़े रहने और बिमारियाँ बुढ़ापे अथवा किसी अन्य कारण से घर की सीमा में कैद लोगों के लिए बाहर की दुनिया से संपर्क और संवाद का यह बहुत ही सस्ता, सरल और सुविधाजनक जरिया है।

यार दोस्तों और नाते रिश्तेदारों के साथ मिल बैठकर घंटों गप लगाना, एक दूसरे की खिंचाई और ठहाकों के बीच साथ खाना पीना, सुख-दुख की साझेदारी, बच्चों के साथ खेलना, कुछ उनकी सुनना कुछ अपनी कहना -इन तमाम छोटे-छोटे और लगातार दुर्लभ होते जा रहे सुखों का स्थानापन्न सोशल मीडिया नहीं हो सकता है। इतना जरूर है कि किसी कारणवश यदि नियमित रूप से हम यह सब ना कर पाए तो सोशल मीडिया के जरिए उस अभाव की थोड़ी-बहुत भरपाई की जा सकती है।

समयाभाव, बढ़ते यातायात और प्रदूषण से जूझते लोगों के जीवन को सोशल मीडिया ने कुछ मायनों में आसान भी बनाया है। किसी मुद्दे पर सलाह मशवरा करना हो, सभा/सेमिनार/समारोह का आयोजन करना हो, घर बैठे दवाई, खाना या कुछ और ज़रूरी सामान मंगाना हो, टिकट बुक करने हो, सब कुछ संभव है सोशल मीडिया के जरिए। इतना ही नहीं बागवानी, कुकिंग, फैशन, साहित्य, राजनीति, स्वास्थ्य, ट्रेवल, आर्ट एंड क्राफ्ट आदि से संबंधित इतने ग्रुप्स और साइट्स हैं सोशल मीडिया पर जिनसे आप अपनी सुविधानुसार जुड़ सकते हैं।

अनावश्यक ताजोक और घुसपैठ का कोई खतरा नहीं। वस्तुतः सोशल मीडिया एक ऐसा साधन है उन लोगों और मुद्दों से जुड़ने का जो हमारे दिल के बहुत करीब हैं और साथ ही उन लोगों से एक सुरक्षित दूरी तथा तटस्थ संवाद बनाए रखने का भी जिन्हें बर्दाश्त करने के लिए हम बाध्य होते हैं।

मुझे लगता है कि आधुनिक जीवन के सिकुड़ने-सिमटने से मिटने के कारण कुछ और हैं। सोशल मीडिया तो महज़ एक माध्यम है वस्तुओं, विचारों और व्यक्तियों को एक प्लेटफार्म पर आमने सामने लाने का। दरअसल सोशल मीडिया चिराग में बंद जिन्न की तरह है। कब कहां कैसे इस्तेमाल करना है यह आपके हाथ में है। आप आका हैं, आका बनकर रहेंगे तो सब दुरुस्त, गुलाम बने तो सिर धुनते नजर आएंगे।

-डॉ. शगुन अग्रवाल

सोशल मीडिया में सिमटता जीवन

मनुष्य सामाजिक प्राणी है—बहुत ही घिसा पिटा पुराना वाक्य। लेकिन आज के समय में पता चल रहा है कि इस ‘सामाजिक प्राणी’ में “सामाजिक” होने की कितनी क्षुधा थी कि जैसे ही उसे सोशल मीडिया का साथ मिला, वह इतना सामाजिक हुआ कि असामाजिकता के दौर से गुजरते हुए तमाम तरह की व्याधियों से ग्रस्त होने लगा।

बात काफी विरोधी है मगर है तो सच। यदि ऐसा नहीं होता तो इस अंक का शीर्षक होता.. ‘सोशल मीडिया में विस्तार पाता जीवन’। पर यह कैसा विस्तार है, जिसने हमें बेहद संकुचित बना दिया है? इसका बहुत बड़ा कारण यह है कि सोशल मीडिया ने, जिसमें हम फेसबुक, व्हाट्सप्प, ट्विटर आदि को गिनते हैं, ने हमारे लिए एक ऐसी आभासी दुनिया बना दी है जिसमें सारे रस, सारे भाव मौजूद हैं पर वास्तव में कुछ भी नहीं है।

हम जाती जिंदगी में शेयरिंग की बात नहीं करते, वहाँ हम “प्रायवेसी और स्पेस” की बात करते हैं जबकि सोशल मीडिया पर ज्यादा से ज्यादा “फॉलोअर्स, लाइकिंग और शेयरिंग” जिंदगी बन गए हैं। व्यक्ति अपने छोटे बड़े हर सुख - दुख को जब तक शेयर नहीं कर लेता उसे जिंदगी अधूरी सी लगती है आज समाज में व्यक्ति के रुतबे का निर्धारण उसके काम की अपेक्षा उसके सोशल मीडिया अकाउंट के फॉलोअर्स, उसके पोस्ट्स के लाइक्स और शेयरिंग्स करते हैं।

सुबह उठ कर और कुछ करने से पहले हाथ आस-पास मोबाइल टटोलने लगते हैं। गुड मॉर्निंग का वर्चुअल आदान प्रदान होता है। पिछली रात भेजे गए संदेशों के लाइक्स और शेयरिंग्स चेक की जाती हैं तब जा कर कहीं दिन की शुरुआत हो पाती है। लाइक्स का चलन तो ऐसा बढ़ा है कि बहुत बार देखने में आता है कि किसी के दुर्घटना ग्रस्त होने या प्रियजन के स्वर्गवासी हो जाने की सूचना पर भी सहानुभूति के उद्गार कम, लाइक्स ज्यादा होते हैं। अधिकांश लोग तो की-पैड के

कुछ अक्षर दबा कर सहानुभूति या प्रसन्नता जैसे भाव तक व्यक्त करने की जहमत नहीं उठाते, उनके लिए खुशी भी 'थम्स अप' है और गम भी। यहीं उनके कर्तव्य की इतिश्री हो जाती है।

कही कोई दुर्घटना हो रही हो अथवा किसी की जान जा रही हो, अधिकांश लोग पीड़ित की सहायता करने की बजाय उस "युनीक" दृश्य की वीडियो बनाना श्रेयस्कर समझते हैं क्योंकि यदि वीडियो वायरल हो गया तो ज्यादा लाभ है। ऐसा लगता है कि सोशल मीडिया ने हमारी भावनाओं को भी कहीं गहरे तक प्रभावित किया है। हम इतने आत्म मुग्ध हो गए हैं कि रात-दिन अपनी विभिन्न कौणों से ली गई छवियों को पोस्ट करते रहते हैं। हालाँकि हर पल और हर क्रिया कलाप की दी गई यह जानकारी कई बार किस कदर खतरनाक हो सकती है यह चेतावनी स्वयं सोशल मीडिया भी समय समय पर देता रहता है। रोमांचक और अद्वितीय सेल्फी लेने की चाह में जान गंवाते लोगों की दुर्घटनाओं को तो हम देखते सुनते रहते ही हैं।

ऐसा नहीं है कि सोशल मीडिया ने हमारे दायरे को, चाहे वह जान-पहचान का हो या ज्ञान का, बढ़ाया नहीं है। आज पूरी दुनिया हथेली पर रखे एक छोटे से स्मार्ट फोन में समाई हुई है। बड़े से बड़े सेलिब्रिटीज तक हमारी मुट्ठी में हैं। हम जिसको चाहें प्रशंसा कर के "लाइक्स" के पहाड़ पर बिठा दें और जिसे चाहें "ट्रोल" के गर्त में डाल दें। मीडिया का दबाव किसी को भी बहुत कुछ बदलने पर मजबूर कर देता है।

इन सारी बातों के बावजूद यह भी सच है कि इस आभासी दुनिया ने बहुतों की वास्तविक दुनिया को संकुचित कर दिया है। हमारी फ्रेंड लिस्ट में सैकड़ों अनदेखे अनजाने लोग होते हैं जिनसे लगातार संपर्क बना रहता है। जिनकी दिनचर्या के प्रतिपल की खबर भी रहती है परंतु वे अपने ही घर में रहने वाले माँ-पिता और दादा-दादी के सुख-दुखों से नितांत बेखबर रहते हैं। हमें एंजेला जॉली की बीमारी का तो पता होता है, उसे हम थम्स अप भी कर चुके होते हैं पर अपने पड़ोस में कराहते किसी वृद्ध व्यक्ति की कराह शायद ही सुनाई पड़ती है।

सुख के दिन तो थम्स अप के सहारे कट जाते हैं लेकिन जब वास्तविक जीवन में कठिनाइयाँ आती हैं और व्यक्ति आभासी दुनिया से बाहर निकलता है तो अपने आप को नितांत अकेला पाता है। यह अकेलापन उदासी का ऐसा घटाटोप बना देता है कि चारों ओर अंधकार ही दिखाई देता है। घबराया व्यक्ति जब दोबारा सोशल मीडिया की शरण में सहानुभूति तलाशने जाता है तो कोरे लाइक्स या दो-चार शाब्दिक कमेंट्स के कुछ नहीं मिलता है।

उदासी के इस आलम में जब किसी सहानुभूति पूर्ण कंधे की जरूरत होती है तब दिखता है कि आसपास के सभी लोग ब्लू टूथ से कान बंद किए आँख के आगे मोबाइल या लैपटॉप रखे सोशल मीडिया के दोस्तों के सुख दुखों को लाइक करने में व्यस्त हैं। निष्कर्ष यह कि अगर अपनी भावना व्यक्त करनी हो तो अपने ही परिवार के एक ही घर में रहने वाले सदस्यों के मित्र बलिए और तब अपनी बात उन तक पहुँचाइए। शायद यही कारण है पति, पत्नी, बच्चे या परिवार के अन्य सदस्य एक साथ रहते हुए भी एक दूसरे को सालगिरह या किसी उपलब्धि की शुभकामनाएँ बड़े ही भावुक अंदाज में सोशल मीडिया में दे रहे होते हैं। जब व्यक्ति आमने-सामने किसी के प्रति अपनी भावनाएँ प्रगट करता है तब केवल उसके शब्द ही नहीं बल्कि उसके हाव-भाव और संपूर्ण व्यक्तित्व ही उसकी भावना को गहराई और सच्चाई से अभिव्यक्त करने में सहायता करते हैं। वह सोशल मीडिया के कमेंट्स की तरह कोरे शब्द नहीं होते।

आज का युग चाहे विश्व ग्राम का युग क्यों न हो गया हो पर व्यक्ति की अतिव्यस्तता ने दूरियों को बढ़ा दिया है। एक-दूसरे से मिलने जुलने का समय कम रह गया है अतः सोशल मीडिया की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। यह ऐसे पुल की तरह है जो व्यक्ति को विभिन्न रिश्तों से जोड़ता है। चाहे देश-दुनिया से संबंध जोड़ना हो चाहे देश-दुनिया का ज्ञान जानना हो, सोशल मीडिया पूरी दुनिया समेटे हर पल हमारे साथ है। बात सिर्फ इतनी है कि यह एक सहायक के रूप में ही जीवन में रहना चाहिए हमारे जीवन को निर्देशित करने वाले स्वामी के तौर पर नहीं।

डॉ. गीता शर्मा

प्रतिभा राय के उपन्यास द्रौपदी पर आधारित रेडियो वार्ता
वार्ताकार : डॉ० विभा नायक

आकाश का न कहीं आदि है और न कहीं अंत। सागर का न क्षय होता है और न उसकी कोई वृद्धि। सूर्य का न उदय है और न अस्त। मनोकामना की न पूर्णता होती है और न रिक्तता। हमारे संबंध की भी वैसे ही न कोई संज्ञा है और न कोई अंतिम परिणति। अतः इस मामूली से पत्र में अंतिम बात क्या लिख पाऊंगी? ये पंक्तियां हैं मूर्तिदेवी पुरस्कार से सम्मानित उड़िया भाषा में लिखे उपन्यास द्रौपदी की। जिसकी लेखिका हैं प्रतिभा राय और जिसका हिंदी में अनुवाद किया है श्री शंकर लाल पुरोहित ने।

प्रतिभा राय का यह उपन्यास प्रेम, भक्ति उत्सर्ग और इनके संश्लेषण से स्त्रीत्व का आख्यान प्रस्तुत करता है। द्रुपद नंदिनी, पांचाल देश की राजकुमारी, यज्ञ वेदी से जन्मी याज्ञसेनी या एक वाक्य में कहें तो कृष्ण की कृष्णा की अद्वितीय तेजस्विता जब मानवीय धरातल पर टकराती है, तो जैसे पृथ्वी की अथाह सहनशीलता और 'पर' के लिए 'स्व' का उत्सर्ग भाव द्रौपदी के तेजोमय नारीत्व का पर्याय बन जाता है। पर इस प्रक्रिया में उसका जीवन कितना संघर्षमय दुखमय और त्रासद हो जाता है कि क्या कहें। स्वयं द्रौपदी के शब्दों में - "मेरे जीवन की कथा मर्त्यलोक के किसी मानव के जीवन-चरित के अलावा कुछ नहीं है। मेरे जीवन में घटी एक-एक लोमहर्षक घटना को देखकर कलियुग के लोग विचार कर सकेंगे, द्रौपदी की लांछना कभी किसी युग की नारी ने सही है? भविष्य में ऐसा लांछन ईश्वर करे कभी किसी को न भोगना पड़े।"

दुख और पीड़ा का यह वृत्तांत किसी अपने से कहे बिना जी भी कैसे माने। अतः द्रौपदी अपने प्रथम प्रेम, जीवन की अंतिम परिणति अपने अन्यतम सखा जो अपनी कृष्णा के स्मरण मात्र पर ही उपस्थित हो जाते हों से अपने महाजीवन के अंतिम क्षणों में कही-अनकही सब कहती है, पत्र शैली में।

स्पष्ट है कि इस उपन्यास का वितान है आत्मकथात्मक आत्मपरक शैली में

संगुंफित पत्र शैली। आत्मकथात्मक शैली के उपन्यास उन्हें कहते हैं, जिनमें उपन्यास का मुख्य पात्र स्वयं अपनी कथा कहता है। हिंदी में शेखर एक जीवनी, त्यागपत्र इसी श्रेणी के उपन्यास हैं।

आत्मकथात्मक शैली में ही एक प्रचलित शैली है पत्र शैली जिसमें आत्मकथाकार अपने जीवन के विशिष्टतम पात्र को संबोधित करते हुए अपने जीवन के समग्र प्राप्य-अप्राप्य को आत्म साक्षात्कार के साथ आत्म-स्वीकार शैली में कहता चलता है। हाल ही में साहित्य अकादमी से पुरस्कृत चित्रा मुङ्गल का उपन्यास पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा इसी शैली में लिखा उपन्यास है। अंतर केवल इतना है कि 224 पृष्ठों का यह उपन्यास कई छोटे-छोटे पत्रों से बना है जबकि 261 पृष्ठों के उपन्यास द्रौपदी में आद्यंत एक ही पत्र चलता है। नाला सोपारा जहां पात्र विशेष के जीवन के आरंभ से अंत तक की कथा कहता है वहीं द्रौपदी उपन्यास में फ्लैशबैक या पूर्व दीप्ति शैली का प्रयोग करते हुए अवसान के अंतिम क्षणों से कथा आरंभ होती है।

जीवन के अंतिम उच्छ्वास में जब प्राण देह को छोड़ जाने के लिए आतुर हैं, पूरा जीवन एक चित्रपट के समान द्रौपदी की आंखों में जीवंत हो उठता है और तभी लिखी जाती है कृष्ण के नाम अपने रक्त से लिखी चिट्ठी जिसके विषय में द्रौपदी कहती है- अपने रक्त से लिखी यह चिट्ठी ही आज मृत्युपथ की सहचरी है। अपनी चिट्ठी पढ़ते-पढ़ते अगर मेरी आत्मा शरीर को छोड़ जाए, तो समझना इसके प्राप्तकर्ता तुम्ही हो।

उपन्यास इसी शैली और क्रम में आगे बढ़ता है। हालांकि इस पत्र को लिखने से बहुत पूर्व ही कृष्ण का महा-निर्वाण हो चुका है। पर कृष्णा के लिये अलौकिक रूप से कृष्ण उसके साथ ही हैं। यूं भी जब जन्म कृष्ण छवि के साथ हुआ कि उपयाज ऋषि ने नाम भी कृष्णा रखा, तो भला जीवन का समापन भी कृष्ण को अंतिम समर्पण किए बिना कैसे संभव होता! इस सम्बंध में द्रौपदी का जन्म वृत्तांत द्रष्टव्य है- उपयाज ऋषि ने कहा द्रुपद दुहिता इस श्यामांगी का जन्मनाम

कृष्णा रहे। पिता अस्पष्ट स्वर में कह रहे थे- हे कृष्ण! अपनी कृष्णा तुम्हारे ही हाथों अर्पित करूँगा। कृष्ण और कृष्णा स्वर्गीय, पवित्र, मधुर प्रेमधारा में मेरा हृदय डूब उठा।

इस प्रकार द्रौपदी उपन्यास की विशेष बात यह है कि यहां केंद्रीय पात्र तो द्रौपदी ही है पर द्रौपदी के विचार और मानस को जो तत्व सबसे अधिक प्रभावित करता है और जिससे आत्म निर्देशित होकर द्रौपदी असहनीय को भी सह्य स्वीकार कर लेती है, वह एकमात्र तत्व कृष्ण तत्व ही है। इसलिये द्रौपदी यहाँ द्रौपदी, याज्ञसेनी से कहीं अधिक कृष्णा है, जिसके प्रत्येक निर्णय के केंद्र में कृष्ण ही हैं।

लेखिका प्रतिभा राय ने कृष्ण के प्रति द्रौपदी की सख्य भाव भक्ति को प्रेम के प्रथम प्रस्फुटन से विस्तार दिया है। जो क्रमशः गहराता हुआ भक्ति में परिणत हो जाता है। पर कृष्ण की दृष्टि में तो कुछ और ही अदृष्ट स्पष्ट था, जिसका माध्यम बनना था कृष्ण रूपा कृष्णा को। अतः कृष्ण के ही निर्देश पर द्रौपदी के प्रेमास्पद बनते हैं अर्जुन। चकित और आहत याज्ञसेनी का स्त्रीत्व जैसे उससे प्रश्न करता है- “क्या मेरी अपनी कोई इच्छा नहीं? कोई कामना नहीं? कोई आकाँक्षा नहीं?” पर द्रौपदी के आहत स्त्रीत्व को कृष्ण का पुनः निर्देश होता है- “कि महत्तर स्वार्थ के लिये क्षुद्र स्वार्थ की बलि दी जा सकती है। वही जीवन की महानता प्रतिपादित कर सकता है।”

कृष्ण के इस निर्देश के साथ ही द्रौपदी के जीवन की दिशा ही बदल जाती है। इसी प्रक्रिया में वे निर्णय भी कृष्णाज्ञा में स्वीकृत हो जाते हैं, जिन्हें स्वीकार करना सामान्य स्त्री के बस की बात नहीं। फिर चाहे वह पंचपति वरण का असह्य निर्णय ही क्यों न हो। इस सम्बंध में द्रौपदी का कथन है- “कृष्ण के इंगित से मैं इतना जान सकी कि बृहत्तर स्वार्थ के लिये क्षुद्रतर स्वार्थ की बलि दी जा सकती है। मैं पंचपति वरण नहीं करती हूँ तो पाण्डव सत्य की रक्षा नहीं कर सकेंगे। पृथ्वी पर धर्म स्थापना में विघ्न होगा। अतः स्वयं मैं निज की बलि दे सकती हूँ।”

इसी प्रकार अर्जुन समेत पंच पतियों की सह-पत्नियों को स्वीकार करना, कर्ण द्वारा किये गए अपमान और लांछनाओं को क्षमा करना, बल्कि कर्ण के प्रति माता कुंती के दुख में समान रूप से द्रवित होना, द्रौपदी के व्यक्तित्व के कुछ ऐसे अंश हैं, जिन्हें तब तक समझा और स्वीकार नहीं किया जा सकता, जब तक कृष्णा के कृष्णमय अनन्य प्रेम को न समझ लिया जाये।

कृष्ण के प्रति अनन्य भाव और प्रेम का विस्तार इतना है कि उसमें समा जाने के लिये सृष्टि भी कम है। फिर इस जीवन का भला क्या मोल? यूँ भी समर्पण में विचार के लिए स्थान नहीं होता। अतः धर्म स्थापना हेतु कृष्ण का जो भी संकेत होगा द्रौपदी को वह स्वीकार्य है। यह अलग बात है कि यह स्वीकार्यता चले आ रहे पितृसत्तात्मक सामाजिक नियमों से जब-जब टकराती है, द्रौपदी को लांछना ही मिलती है। किंतु कई बार नियति केवल लांछना तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि ऐसे विराट सत्य से भी साक्षात्कार करा देती है कि क्या कहें- द्रौपदी के जीवन का समापन भी ऐसे ही विराट सत्य से होता है जो जीवन की अंतिम चाह को भी समाप्त कर देता है। द्रौपदी के पंचपति मृत्यु मार्ग में उसे अकेला छोड़ आगे बढ़ जाते हैं। ठहरते तक नहीं। आहत द्रौपदी अपने पत्र में कहती है-

“धर्म की रक्षा के लिए जीवन भर कितनी यातनाएँ नहीं सही! सोचा था पातिव्रत के कारण और अपने धर्माचरण के बल पर पति संग स्वर्ग जा सकूंगी। पर गिरिराज हिमालय के पाद देश की स्वर्ण रेणु छूते-छूते ही पाँव फिसल गए। मैं गिर पड़ी। पतियों ने मुड़कर भी नहीं देखा बल्कि धर्मराज युधिष्ठिर ने भीम से कहा मुड़कर न देखो आगे आ जाओ।” जिन्हें प्रेम किया जिनके लिए जीवन का उत्सर्ग किया, उन्होंने अंत समय में ऐसे साथ छोड़ दिया कि पीछे मुड़कर भी न देखा!

यही अंतिम वृत्तांत एक विराट और महाजीवन का अंतिम सत्य भी था कि पति पत्नी का संबंध, स्नेह, प्रेम, त्याग और उत्सर्ग सब एक छद्म है। किंतु द्रौपदी की विशेष बात यह है कि उसकी तेजस्विता उसे ऐसी दुखद और त्रासद स्थितियों में भी मलिन नहीं होने देती। जिस पवित्र यज्ञवेदी से उसका जन्म हुआ है, उसकी पवित्र अग्नि द्रौपदी के हृदय को सदैव निश्छल रखती है।

किसी के प्रति उसके हृदय में कोई क्लेश नहीं। कोई दुर्भावना नहीं। इसका प्रमाण है कि सामान्य मनुष्य के समान वह रोती कलपती नहीं है। आत्म धिक्कार के भाव में भी नहीं है। बल्कि वह तो हृदय खोलकर अपने वासुदेव कृष्ण से यही मांगती है कि जो कष्ट उसने सहा, भविष्य में किसी नारी को वह न भोगना पड़े। पंचपति वरण की स्थिति किसी भी नारी के जीवन में न आए और भले ही जीवन में केवल कष्ट ही मिला पर फिर भी मोक्ष भी नहीं चाहिए। चाहिये तो इस कृष्णमय भारत भूमि में पुनर्जन्म।

इस प्रकार इस उपन्यास के माध्यम से सदियों पहले घटित महाभारत का द्रौपदी पुनराख्यान करती है कि किस प्रकार महाभारत उसके हृदय पर घटा। जिसका प्राप्य कष्ट और पीड़ा के अतिरिक्त कुछ न था। प्रतिभा राय ने द्रौपदी के चरित्र के माध्यम से यह भी स्थापित किया है कि इस पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री चाहे कितने ही दैवीय गुणों से युक्त क्यों न हो? कर्तव्य की वेदी पर उसने चाहे अपनी हर आकांक्षा-महत्वाकांक्षा का उत्सर्ग ही क्यों न कर दिया हो पर ये स्वार्थी और निष्ठुर समाज उसे लान्छनाएं सौंपने से गुरेज़ नहीं करेगा। साथ ही जब द्रौपदी जैसी नारी को इतने कष्ट भोगने पड़े, तो सामान्य स्त्री की तो बात ही क्या? परंपरागत स्त्रीवादी चिंतन यहाँ स्त्रीत्व विश्लेषण का आधार है। किंतु लेखिका प्रतिभा राय ने पौराणिक पृष्ठभूमि पर जिस प्रकार उसे प्रस्तुत किया है, वह उपन्यास को एक पठनीय रचना बनाता है।



यात्रा वृत्तांत वियना

वियना एयरपोर्ट पर सुबह 2 बजे ही पहुँच गयी थी। अगले दिन की कोई बुकिंग नहीं थी। न होटल न बस न ही कुछ और ही। मेरी सभी देशों की यात्रा लगभग ऐसी ही थी। तुरंत तय किया कहाँ जाना है क्या करना है। नींद जोरों से आ रही थी। सोना जरूरी था वरना अगला दिन बर्बाद हो जाता। वो मैं कर नहीं सकती थी। सबसे पहले एयरपोर्ट का वो कोना खोजा जहाँ सीधी कुर्सियों वाला बेंच हो। बीच में पार्टिशन न हो। जल्द ही मुझे वो मिल गया। शॉर्ट्स पहना था इसलिए सोते समय पैर उस जगह अच्छे नहीं लगते इसलिए बाथरूम जाकर फुल जीन्स पहन आयी। समझ सकते हैं आप लोग। स्टोल निकाला पासपोर्ट वाले बैग को सीने से लपेटा और स्टोल ऊपर के पूरे हिस्से पर डाल सो गई। बीच बीच में समय देखने के लिए नींद खुली। मेरे सामने के बेंच पर एक लड़का भी अपनी जगह बना कर सो चुका था।

सुबह 6 बजे तक तान कर सोई। अब एयरपोर्ट पर चहल पहल हो चुकी थी। बाथरूम गयी। कपड़े बैग से निकाला और फुलटू नहाधोकर तरोताज़ा हो गयी अगला शहर देखने को। रहने में काफी खर्च हो रहा था और यहाँ पिछले शहर से ज्यादा लग रहा था किराया इसलिए आजका दिन पूरा यात्रा करने का ठाना।

पूरे दिन का बस टूर का टिकट ऑनलाइन देखकर तुरंत बुक किया। बस 9.30 पर मिलने वाली थी। मैंने उस जगह पर पहुँचने के तमाम रास्ते देखें। पर कोई सीधा नहीं था। बस की टिकट ले चुकी थी इसलिए निकलना तो पड़ेगा ही। बाहर निकली। एक बस खड़ी थी। मैंने पहुँचने वाली जगह के बारे में पूछा उसने डरा दिया बोला बहुत दूर है वो आधे रास्ते तक 16 यूरो मांग रहा था। मुझे भरोसा नहीं हुआ इसलिए वो कैंसिल किया। तभी मुझे मेट्रो का रास्ता नज़र आया। पर जिस जगह मैं थी वो बहुत आउटर में थी। ट्रेन का सहारा लिया जिसकी टिकट काफी महँगी थी। ट्रेन टिकट से मेट्रो रूट पर पहुँची और 8 बजे तक अपने गंतव्य

के पास के मेट्रो स्टेशन पर। इसी बीच मैंने wifi से शहर को थोड़ा जान लिया था। मेट्रो स्टेशन से पहला काम था शहर का मानचित्र लेना। वहाँ के कर्मचारियों से अच्छे से पता लगाया कि कैसे जाया जा सकता है।

तमाम विकल्पों में 11 नंबर यानी पैदल मुझे बेस्ट लगता है। पैसा तो लगता नहीं और अनुभव की भरमार हो जाती है। पीछे बड़ा पिट्टू बैग, आगे छोटा पिट्टू बैग, कमर पर अपना पसंदीदा बैग को टांग मैं निकल चुकी थी। मेरे पास 1.50 घंटा था और दूरी महज 25 मिनट पैदल की। जहाँ wifi होता था वहाँ तो ऐश होती थी बिना भटके कही भी पहुँच जाती थी। मगर विएना में अधिक wifi नहीं दिखा। स्क्रीन शॉर्ट पर जो मैप था उससे मैं भटक चुकी थी। नया शहर शुरू में मुझे खूब डराता था। इसने भी डराया। जबतक 9 नहीं बजा था लोगों से पूछकर रास्ता खोज रही थी। बीच बीच में कोई रेस्टोरेंट मिलता तो रुक कर wifi भी खोजती। 3 बार जब घूमकर गोल में उसी जगह पर पहुँचने लगी तो मन भन्ना गया। टैक्सी वाले खूब मिले दिल्ली की तरह। मुझे भटकता देख मुँह मांगी कीमत मांगते। पर मैं देने वाली नहीं थी। खोज लूंगी जानती थी।

तीसरी बार उसी जगह पहुँच हिम्मत को जुटाया। जानती थी मंजिल के आसपास ही हूँ जिंदगी में हमेशा तो यही होता रहा था। अब बस निकलने में बस 10 मिनट बचा था। घूमते घूमते मैं वहाँ पहुँच गयी। बस देखते ही सुकून मिला। बस की कंडक्टर ने ध्यान से टिकट नहीं देखा और कहा पीछे वाली रोड पर आपकी बस है। मुझे भी चेक करने का टाइम नहीं था। सामान लेकर दौड़ते हुए उस बस तक पहुँची उन्होंने कहा आप तो मिली थी मुझे। आपकी बस पीछे वाली रोड पर है। मुझे इस महिला पर विश्वास हो गया था कि वो यकीन से कह रही है। मैं फिर दौड़ी इतनी तेज हाफ रही थी। सुहाने मौसम और शहर में भी मुझे कोलकाता वाले पसीने निकल रहे थे। बस स्टार्ट हो चुकी थी। मेरे सामने से ही वो जा रही थी। मैं उसे किसी भी कीमत पर छोड़ नहीं सकती थी।

खूब दौड़ी इतना तेज दौड़ी की जिंदगी में समान लेकर इतना न दौड़ी होंगी। दिमाग कह रहा था बस निकल जायेगी। पर मन ने कहा नहीं सीमा मिल जाएगी।

एकाएक ड्राइवर ने शीशे में मुझे दौड़ते देखा। बस रोकी। मैं चढ़ी। सामान वही बस में जमीन पर पटका और कुछ क्षण के लिए आँखे बंद कर ली।

कंडक्टर को इशारे से बस स्टार्ट करने को कह चुकी थी। कुछ ही सेकंड में मैंने खुद को शाबाशी दिया। जियो सीमा... फिर शहर को खूब जिया... फिर कभी आऊंगी ये वादा करके दूसरी जगह बढ़ गयी। इस सिमरन का हाथ उसके राज़ ने नहीं पकड़ा था। क्योंकि उसका राज़ तो अब भीतर ही है उसके हौसले में... आगे का खिस्सा लिखा जा रहा है..

प्राग

कल का पूरा दिन प्राग में घूम घूम कर उसे जीने का जीभर सुख लिया। मेरी यात्रा का यह आखिरी पड़ाव है। प्राग से सीधे भारत रवाना होना है। सुबह ब्रेकफास्ट अच्छे से करना होगा जिससे दोपहर का खाना स्किप कर सकूँ। ब्रेकफास्ट करके थोड़ी देर के लिए रिसेप्शन पर बैठी। वहां लगे कंप्यूटर पर मैं शहर की और जानकारीयां और टिकट बढ़िया से कर सकती थी।

बैठने ही जा रही थी कि एक व्यक्ति ने हिंदी में पूछा "आप इंडिया से हैं?" दिनों बाद अपनी माटी की बोली सुन मन आह्लाद भर गया। चलो इस परदेश में कोई हिंदी में बात करने वाला तो मिला था। मेरे पिता की कदकाठी जैसे इस व्यक्ति से मैंने पूछा 'आप कहाँ से हैं?' वो बोले 'पाकिस्तान से'। देखने में एकदम भारतीय। विभाजन के बाद भी हाव भाव और स्वभाव से आज तक बहुत कुछ नहीं बदला है। पाकिस्तान भी तो भारत का ही अंग था। दरअसल वो होटल में पता करने आये थे कि कमरा कितने में मिलता है यहां। उन्होंने मुझसे पूछा तो मैंने कीमत बता दिया। अरे ... ये तो सस्ता है। मैंने कहा हां आज मैंने इंटरनेट

पर उससे भी कम में बुकिंग हो रही है। क्या आप मेरी टिकट कर सकती हैं। काउंटर पर ज्यादा बता रहा है। उनका स्वर अनुरोध पूर्ण था। मैंने कहा जी बताइए इस कंप्यूटर से मैं कर देती हूँ। उनका कोई ईमेल आईडी नहीं था। जो था पुराना उसका उन्हें पासवर्ड याद नहीं आ रहा था। हारकर मैंने अपना ईमेल डाल उनकी बुकिंग करा दिया। धन्यवाद देने के साथ ही खुशी उनके चेहरे पर झलक रही थी। फिर पूछा आज आप कहाँ कहाँ घूमेंगी। मैंने सब जगह बता दिया तो बोलें मैं आपके साथ साथ आज घूमूँ क्या? मैंने कहा ठीक हैं अंकल। मैं तैयार होकर घंटा भर बाद आऊंगी। आप भी तैयार हो जाइयेगा।

एक घंटे बाद अंकल और मैं फिर वही मिले। उन्होंने बताया की आज भारत और पाकिस्तान का वर्ल्ड कप मैच है। मैंने टीवी का चैनल बदला और दोनों बैठ गए। उन्हें बैग से इस्लामाबाद की प्रसिद्ध नमकीन निकालते देख मैंने भी देसी घी में बना बेसन का लड्डू निकाला। पहली बार पाकिस्तान की कोई चीज़ हाथ में थी।

उधर मैच चल रहा था। भारत के बेहतरीन प्रदर्शन से अंकल का मन उचट रहा था। बोल उठे की इंडिया अभी बेस्ट फॉर्म में है और ये खिलाड़ी नाक कटवा रहे हैं। कुछ ही देर बाद कहा आकर मैच देखते हैं चलिए निकलिये। अंकल हाथ में बड़ा सा पानी का बोतल लेकर निकले थे जो उनके बैग में आ नहीं सकता था। वो कुछ ही कदम चले होंगे कि लड़खड़ाने लगे। बोलें थोड़ा बैठूंगा। पैर में दर्द बना रहता है। उनका दर्द एकदम वैसा था जैसा कभी मेरी माँ को था।

उस बीमारी का नाम अंकल को नहीं याद आ रहा था। मैंने झट्ट से कहा 'साटिका' तो बोले हाँ यही तो याद कर रहा था। फिर अंकल ने कहा मैंने नाश्ता नहीं किया चलिए कर लेते हैं। इस दौरान उन्होंने अपने और परिवार की पूरी जानकारी देने के साथ सबकी तस्वीर भी दिखाई। मैंने पूछा आपने कैसे पहचाना था मैं भारत की ही होंगी। बोले भारत की लड़कियाँ अकेले निकल सकती हैं घूमने। हमारे यहाँ नहीं।

वह सरकारी नौकरी से रिटायर थे। विश्व का बहुत बड़ा हिस्सा घूम चुके थे। मैंने बरबस पूछा आप भारत गए हैं। उनका ज़वाब था नहीं। कारण पूछने पर बताया भारत जाने के लिए तीन रिलेटिव दिखाने होते हैं। मेरा एक तो था पर दो मैंने ऐसे ही जाली पते लिख दिया था। जिसकी वजह से मुझे जेल में बंद कर दिया गया था।

ये पुरानी पीढ़ी के थे इसलिए भारत के प्रति उनका नज़रिया समझ आ रहा था। बस मुझसे खुल के कह पाने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। अब अंकल केएफसी की ओर चले। उन्होंने पूछा तुम तो शाकाहारी हो रास्ते में कैसे मैनेज करती हो। मैंने कहा सुपरमार्केट का दूध डब्बा खूब काम आता है। बोले मैं तो कभी नहीं पीता। यहां लोग सुअर का दूध पीते हैं। इतना सुनते ही मेरा जी गिनगिना उठा। फिर मैं भी वहाँ दूध नहीं पी पाई।

रेस्टोरेंट में अंकल ने अपने लिए चिकन और मेरे लिए वेज बर्गर आर्डर किया। उनका बिल चुकाना मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने कोल्ड्रिंक का भुगतान कर शांति का अनुभव किया। अंकल ने पाकिस्तान में तेल का कुआँ निकलने वाला है कहते हुए उसकी पुरी कहानी सुनाई। अचानक पूछ बैठे आपके मोदी साहब सब ठीक कर रहे हैं। हां अंकल पहले से सब बदल गया है। भारत विकास की राह पर है। मेरा सधा ज़वाब था।

उनका सरनेम भुट्टो था। वो भुट्टो के करीबी रिश्तेदार थे। मैं उनसे बात करते समय सहज नहीं हो पा रही थी। पता नहीं क्यों मन में अविश्वास के साथ हल्का सा डर भी था। उन्होंने नंबर मांगा तो मैंने अनसुना कर दिया। वहाँ से जादुई घड़ी देखने हम गए। अंकल के पैरों के बढ़ते दर्द के कारण मैं ही उनका बैग, पानी की बोतल उठाये हुए थी। कुछ देर बाद कहा अब मैं रूम पर जाकर आराम करूँगा। मैंने कहा चलिए अंकल आपको छोड़ दूँ। मैंने उन्हें होटल छोड़ा और घूमने निकल पड़ी।

डॉ सीमा सिंह

सोशल मीडिया और हमारे बदलते सरोकार

“आजकल मैं भीड़ में भी अकेली हूँ
अकेली होकर भी भीड़ का हिस्सा हूँ
बड़ा अजीब है कि समाज से कटकर भी
अब मैं सोशल मीडिया पर सामाजिक बनी जा रही हूँ”

सोशल मीडिया के बढ़ते दायरे से आज कोई भी अछूता नहीं है बल्कि कहना चाहिए की ये सदी ‘सोशल मीडिया’ की ही मानी जानी चाहिए। आज इसके प्रयोग और परिणाम को लेकर जब तमाम तरह की बहसों जोर पकड़े हुए हैं, तो इतना तो स्पष्ट है कि आप इसके पक्ष या विपक्ष में रहते हुए भी आप इससे अछूते नहीं हो सकते। पूंजीवादी दौर में वैश्वीकरण की चमक से फीके पड़ चुके रिश्तों, समाज और परिवार से दूर मनुष्य इस आभासी दुनिया के बहुत नज़दीक पहुँच चुका है।

सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों जैसे फेसबुक, ट्विटर, इन्स्टाग्राम, व्हाट्सप, स्काइप, गूगल, हेंगआउट विभिन्न एप्स इसके प्रमुख साधन हैं। दुनिया के सभी देशों में लोग अपनी सुविधा, परिवेश और रुचि के अनुरूप इनका इस्तेमाल कर रहे हैं। राजनीति, फिल्म जगत, साहित्य, कला, मीडिया और कॉरपोरेट जगत आदि से लेकर आम आदमी तक अपनी उपस्थिति इन माध्यमों में दर्ज करा रहे हैं और अपनी दैनिक गतिविधियों में कई घंटे वे इन प्लेटफॉर्म पर बिता रहे हैं।

इन सोशल मीडिया माध्यमों की इतनी लोकप्रियता का एक कारण इन तकनीकों का यूजर फ्रेंडली होना भी है। ये अत्याधुनिक तकनीक वाले मोबाइल फ़ोन से जुड़कर हमारे हाथों का जरूरी हिस्सा बन गए हैं। समय-समय पर इनमें किये जा रहे जरूरी बदलावों, नई सुविधाओं और इस पर काम करने की सरलता के कारण कभी कंप्यूटर से घबराने वाले उम्रदराज़ भी सोशल मीडिया पर सक्रिय नज़र आते हैं। सोशल मीडिया ने लोगों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। सोशल मीडिया के यूजर की संख्या पर ध्यान दिया जाए तो वे किसी एक बड़े देश की जनसंख्या से भी अधिक पाए जाएंगे इसीलिए इन सोशल मीडिया को संचालित करने वाली कंपनियों का व्यापार के जगत में मुनाफा असीम है।

यह बहुत दिलचस्प है कि आम जीवन में रोज़ाना मिलने वाले दो व्यक्ति जो कभी आपस में बात नहीं करते वे भी फेसबुक की मित्र सूची में शामिल होते हैं, वहीं देश-दुनिया के किसी भी कोने में समान अभिरुचि वाले व्यक्ति सोशल मीडिया पर अपनी दोस्तियां निभाते हैं। सोशल मीडिया के विभिन्न प्रभाव और परिणाम कई बार हमें चौंकाते भी हैं। रानू मंडल जैसी महिला जो कभी सड़कों पर गाने गाकर पेट भरती थीं, आज सोशल मीडिया ने उन्हें स्टार बना दिया है। हमारे आसपास ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ रातों-रात स्टार बनने की यह प्रक्रिया जारी है। हाल ही के दिनों में युवाओं में 'टिक-टॉक' का जबरदस्त क्रेज देखा जा सकता है। यहाँ कुछ सैकंड की वीडियो में अभिनय करके वे अपनी कला की अभिव्यक्ति करते हैं। इस तरह सोशल मीडिया कला, अभिव्यक्ति, मनोरंजन, पैसा और प्रसिद्धि पाने का एक नया माध्यम बनकर उभरा है, लेकिन तस्वीर का एक दूसरा पहलू भी है जो इतनी चमक-दमक के उलट बेहद स्याह और नकारात्मक है।

लोगों के स्वास्थ्य और सामाजिक सरोकारों पर इसके कई तरह के प्रभाव सामने आये हैं। सोशल मीडिया पर कोई भी पोस्ट डालते हैं, वे लोग इस मानसिक उत्तेजना के दौर से गुजरते हैं जहाँ लगातार वो इस पर मिलने वाली प्रतिक्रिया और लाइक पर नज़र टिकाये रखते हैं। इसके चलते वे ऐसे खतरनाक मानसिक दबावों से भी गुजरते हैं जिसके बेहद खतरनाक दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। बच्चों के बीच बेहद लोकप्रिय 'पब जी' जैसे वर्चुअल गेम्स उन्हें मैदान और प्रकृति से दूर कर रहे हैं। इस पर परोसे जानी वाली लगातार हिंसा और मारपीट का उन पर नकारात्मक परिणाम साफ़तौर पर देखा जा सकता है।

समाज में किसी भी बदलाव के लिए हम सोशल मीडिया पर लिखी अपनी पोस्ट और लाइक शेयर करने के खेल भर से अपनी भूमिका को पूरा हुआ मान लेते हैं। जमीनी हकीकत और संघर्ष से हम कटते जा रहे हैं। अभी हाल ही में बच्चा चोरी जैसी अफवाहों ने माँब लिंगिंग की घटनाओं में इजाफा किया है। अपनी वास्तविक दुनिया से कटकर हम आभासी दुनिया के ऐसे दायरों में सिमटते जा रहे हैं जहाँ सारी मानवीय भावनाएं और संवेदनाएं इमोजी में तब्दील हो गयी हैं।

लिखने-पढ़ने, खेलने कूदने, रचनात्मकता, कुछ नया सीखने और किताबों से दूर एक पूरी पीढ़ी बाज़ार के बनाये इस नए जाल में फंसकर बहुत खुश महसूस कर रही है। आज मेट्रो, बसों और ट्रेनों में लोग यंत्र मानव सरीखा व्यवहार करते हुए दिख जाते हैं। सभी के हाथों में फ़ोन और कानों में लीड, सोशल मीडिया में गुमहुआ मानव अपने आस-पास के सरोकारों से कहीं कटा हुआ प्रतीत होता है। पहले सफ़र के दौरान किताबें हमारी साथी हुआ करती थीं। यात्रा के दौरान करीब बैठे मुसाफ़िरों से बातचीत का लंबा दौर चलता था। अब हम इन चीजों से दूर अपनी आभासी दुनिया में व्यस्त हैं।

अभी हाल ही में दिल्ली में लड़कियों के एक हॉस्टल में आग लगने की खबर काफी सुर्खियों में रही। इस खबर की खास बात यह थी कि लड़कियां समय रहते आग लगने की खबर हॉस्टल प्रशासन, फायर सेफ्टी और पुलिस को नहीं दे पायीं और न ही वे अपने परिजनों को इस बारे में कुछ बता पायीं क्योंकि उनका मोबाइल फ़ोन उनके पास नहीं था। हॉस्टल प्रशासन के नियमों के अनुरूप उन्होंने अपना मोबाइल रात को निश्चित समय पर प्रशासन के पास जमा करवा दिया था। अच्छी खबर यह रही कि समय रहते आग पर काबू पा लिया गया। ऐसा हम अपने आसपास कई बार सुनते हैं, जब पढ़ाई का ध्यान रखते हुए बच्चों को मोबाइल से दूर कर दिया जाता है।

आजकल सोशल मीडिया स्टेटस सिंबल का भी प्रतीक बन गया है। इसके अच्छे और बुरे दोनों पहलू हम सभी के सामने हैं। ये इसके प्रयोगकर्ता और प्रयोग पर निर्भर करता है, हम इसके कौन से पक्ष को उभारना चाहते हैं। सोशल मीडिया ने जहाँ हमें जागरूक बनाया है, वहीं उदासीन भी। साफ तौर पर कहा जा सकता है कि इसका सदुपयोग केवल खुद को अलग-अलग रंगों में दिखाने और आत्म-मुग्धता की श्रेणी से बाहर आकर लोगों से जुड़ने, तकनीकी रूप से मजबूत होने, संवाद स्थापित करने, यादों को सहेजने, चेतना फैलाने, विमर्शों, और विभिन्न सरोकारों से जुड़ने के क्रम में उत्कृष्ट साधन के तौर पर भी प्रयोग किया जा सकता है।

डॉ. वंदना

आज पूरा विश्व बड़े ही संकट के दौर से गुज़र रहा है। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक स्थिति हो या धार्मिक वैयक्तिक आस्था। चोट सभी पर पड़ी है। इस वैश्विक संकट से पता नहीं हम कब उबर पाएंगे। किंतु आशा बलवती है। निदान अवश्य होगा।

कहते हैं न हर बुराई में कोई अच्छाई छिपी होती है। कोरोना के कारण हुए इस लॉक डाउन ने हमें बहुत कुछ सोचने- समझने और करने के लिए प्रेरित किया है। सोशल मीडिया के प्रचार-प्रसार ने हम भारतीयों की जीवन-शैली को भी एकदम बदल दिया है। सोशल मीडिया- जो पाश्चात्य देशों की देन है- जिस उद्देश्य को लेकर आरंभ किया गया था वह बड़ी त्वरित गति से अन्य देशों को प्रभावित करता गया। इंटरनेट के जाल में पूरा विश्व फँस गया। इस मास मीडिया ने जहां एक दूसरे को अधिक से अधिक संख्या में जोड़ने का काम किया वहीं बस कुछ ही सेकंड में हमें हर सूचना से अवगत कराने का काम भी करने लगा। सन २००० के बाद भारत में भी तेजी के साथ इसका पदार्पण हुआ। ऑरकुट, लिंकेडिन, याहू के बाद गूगल सर्च इंजन ने जैसे पूरे इंटरनेट पर अपना कब्जा-सा कर लिया। फेसबुक, मैसेंजर, इंस्टाग्राम, ट्विटर आदि ने तो जैसे हर एक को बस अपने आधीन कर लिया है।

अक्सर होता है, मनुष्य जैसे-जैसे विकास करता है वह अपने मूल स्वरूप और संस्कारों से दूर होता जाता है। सभ्यता के आवरण में उसकी संस्कृति, जीवनशैली, आचार व्यवहार और भाव-विचार भी परिवर्तित होते जाते हैं। कई बार तो यह विकास हमें अपने जीवन मूल्यों में से भी विश्रृंखलित कर देता है। जीवन मूल्यों से विश्रृंखलित होना अपने मूल से अपनी जड़ से कट जाने जैसा ही होता है। वही मूल जो हमें स्थायित्व देता है। किंतु यह संसार परिवर्तनशील है और समय गतिशील। परिवर्तन चक्र के साथ गतिशील होना ही पड़ता है नहीं तो पिछड़ जाने

का खतरा बना रहता है। नए को अपनाना अनिवार्य भी हो जाता है। नित्य नवीनता की चाह भी मनुष्य को प्रेरित करती रहती है कुछ करने को अन्यथा जीवन एक रस उससे नीरज हो जाता है। खान-पान, रहन-सहन में स्वतः नवीनता आती जाती है। किंतु कला-साहित्य और संस्कृति के लिए कल्पना की उड़ान भरनी पड़ती है। वैज्ञानिक, खगोलशास्त्री आदि नए-नए खोज अनुसंधान में संलग्न रहते हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नए प्रयोग आवश्यक है।

कंप्यूटर डाटा सूचना यांत्रिकी की इन्हीं आवश्यकताओं की देन है। इन्हीं के कारण हम देश-विदेश, धरती-आकाश, नदी-समुद्र, पहाड़- जंगल सभी के विषय में हर प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। सभी प्रकार के जीव जंतुओं का ज्ञान या कहें कि सारी दुनिया का ज्ञान हमारी मुट्ठी में है। सृष्टि की कोई भी वस्तु आज अपरिचित नहीं रह गई है। आज हर कला की बारीकियां हमारे लिए उपलब्ध हैं। भारत में बैठे हम एक पल में अमेरिका स्थित अपने इष्ट मित्र या स्वजनों को देख सकते हैं, उनसे बातें कर सकते हैं। मानव मस्तिष्क की उपलब्धियों का कोई हिसाब नहीं है। जल-थल-आकाश को नापना या लांघना उसके लिए मुश्किल नहीं रहा।

किंतु यही विकास जब उसके विनाश का कारण बन जाता है तब स्थिति दयनीय हो जाती है। प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की चाहत ने उसको अपनी निर्मितियों से दूर करने की ठान ली है। सोशल मीडिया ने जहां हमें दूर-दूर के लोगों से, पिछड़ों को ढूंढ कर मिलाया है वहीं उसके गलत इस्तेमाल से अपने नजदीकी भी दूर जा रहे हैं। आज यूट्यूब या व्हाट्सएप ने जितना भला किया है उतना ही बुरा भी किया है। हम बिना सोचे समझे किसी भी सूचना पर दौड़ पड़ते हैं, अपने निष्कर्ष देने लगते हैं। अफवाहों की आग में दंगे भड़क उठते हैं जिसमें हमारा सारा सुख-सौहार्द जलकर भस्म हो जाता है। हमारा विकास हमारे विनाश का कारण बन जाता है। ऐसे में भी जयशंकर प्रसाद की कामायनी की यह पंक्तियां अनायास याद आ जाती हैं-

"सुख केवल सुख का वह संग्रह, केंद्रीभूत हुआ इतना,
छाया पथ में नव तुषार का, सघन मिलन होता जितना।
सब कुछ थे स्वायत्त विश्व के, बल वैभव आनंद अपार,
उद्वेलित लहरों सा होता, उस समृद्धि का सुख- संचार।"

आज फिर एक बार संपूर्ण मानव-जाति संकटग्रस्त है। पूरे विश्व में एक साथ विनाश का तांडव नर्तन हो रहा है। हमारी कोई खोज, कोई कल्पना, कोई सोच कारगर नहीं हो रही है। निराशा के इस अंधकार में आशा की हल्की किरण दिखाई देती है हम भारतीयों की प्राचीन जीवन शैली में। हमारे जीवन- पद्धति, आचार-विचार, आस्था-विश्वास आदि में केवल हमारी परंपरा या संस्कार नहीं हैं अपितु उसमें कई वैज्ञानिक तथ्य भी छिपे हैं।

बाहर से आते ही जूते चप्पल उतार कर, हाथ- पैर धोकर भीतर आना, नित्य स्नान-ध्यान-पूजा से तन और मन की शुद्धि करना, दोनों समय ताजा और गर्म भोजन करना, स्वच्छ और स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक है। किसी से भी मिलने पर "राम-राम" "जय श्री कृष्ण" , "राधे राधे", नमस्कार या प्रणाम से अभिवादन करना और उत्तर में हाथ उठाकर आशीर्वाद देना हमारी संस्कृति है। प्रातः सूर्य नमस्कार केवल पूजा पद्धति नहीं बल्कि स्वास्थ्य वर्धक और वनस्पति वर्धक रहा है। प्रातः कालीन सूर्य की किरणों से विटामिन- डी की प्राप्ति तथा सूर्य को अर्घ्य देने से पौधों को पानी की प्राप्ति! पीपल पर विष्णु का वास मानकर पूजा करने में उसकी सुरक्षा भावना प्रबल थी, क्योंकि पीपल ही एक ऐसा वृक्ष है जो चौबीसों घंटे ऑक्सीजन की आपूर्ति करता है। कुछ जीव-जंतुओं जैसे हाथी, चूहा, सिंह, मोर आदि को देवताओं के वाहन रूप में पूजने के पीछे भारतीयों की संवेदना और करुण भावना ही नहीं अपितु प्रकृति को संतुलित रखने की भावना रही है। सभी छोटे से छोटे और बड़े से बड़े जीव प्रकृति और सृष्टि को सुरक्षित रखने में सहायक होते हैं।

सदियों से चली आ रही हमारी आयुर्वेद-चिकित्सा-प्रणाली, विशेष औषधीय गुणों से युक्त हमारे मसाले ना केवल जिह्वा को तृप्त करते हैं बल्कि हमारे तन-मन को हृष्ट-पुष्ट रखकर सबके लिए जीवन दायक सिद्ध हो रहे हैं। प्रस्तर प्रतिमा अथवा चित्रों में देवी-देवताओं को उकेरने का कारण था कलाओं को विकसित करना। कला और साहित्य के विकास में संस्कृति का विकास निहित है। लोक- परंपराओं

तथा संस्कारों के मूल में हमारी आस्था और विश्वास कार्य करते हैं। आज की इस विषमता पूर्ण स्थिति में हमारी मानवीय, हमारी जीवनशैली पूरे विश्व को शिक्षा देने में समर्थ लक्षित होती है। 'सदा जीवन उच्च विचार' को फिर अपना कर, अपने सीमित संसाधनों में रहकर अपनी आध्यात्मिकता के साथ अपनी राष्ट्रीयता को और अधिक मजबूत कर सकते हैं। विकास के वास्तविक उद्देश्य से भटक कर हम लोग और विलासिता की अंधी दौड़ में शामिल होते जा रहे थे; अपनी अस्मिता को पीछे ढकेल पाश्चात्य रंग में रंगते जा रहे थे। पता नहीं यह प्राकृतिक न्याय है अथवा अन्याय। आज जो हो रहा है उसके लिए हम भी कम दोषी नहीं हैं। धरती पर बढ़ता बोझ, प्रदूषण से जहर होती हवा और गंदे नालों का रूप लेती नदियां हमें कैसे क्षमा कर सकती हैं। कटते जंगल, पेड़ों और पहाड़ों से वन्यजीवों की अनगिन प्रजातियां नष्ट होती जा रही हैं। प्रकृति के संरक्षण से हमारा जीवन संरक्षित है यह हमें भूलना नहीं चाहिए। विलासिता की चमक-दमक से, फास्ट फूड के स्वाद और अनावश्यक सोशल मीडिया के जाल से निकलकर देखने का शायद यही समय है। बाहरी चकाचौंध से हटकर अंतर्मन में झांकने का प्रयत्न करें। ध्यान-योग और व्यायाम से तन-मन को स्वस्थ रखें। "सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामय"। यही हमारा मूल मंत्र रहे। प्रकृति और विज्ञान में संतुलन रखें इसी में हमारा गौरव है। यही भारतीयता है। और अंत में-निराशा के अंधकार भरे में झंझावात से हमारी आशा का दीपक बुझने वाला नहीं है। उसकी झिलमिलाते लो को हम संभाल लेंगे यह विश्वास है। महादेवी वर्मा के शब्दों में-

सब बुझे दीपक जला लूँ,
घिर रहा तम आज,
दीपक रागिनी अपनी जगा लूँ,
सब बुझे दीपक जला लूँ।

डॉ. राधिका सिंह

खोया बहुत ,कुछ पाया भी है,
न सोचो केवल गँवाया ही है,
सीखा बहुत ,कुछ किया भी है,
दिया बहुत, थोड़ा लिया भी है!

खेल कई जो खेला न था,
काम बहुत जो किया न था,
मन लगा है खेल में भी,
काम के संकल्प में भी!

घर से जो अनजान रहे,
आज उसे पहचान रहे!
अपनी हॉबी भूल गये थे,
कॉपी-कलम सब छूट गये थे।
रंगों से नाता टूटा था,
सुई से धागा छूटा था!
जैसे सब रूठे बैठे थे,
अपने में ऐंठे-ऐंठे थे।

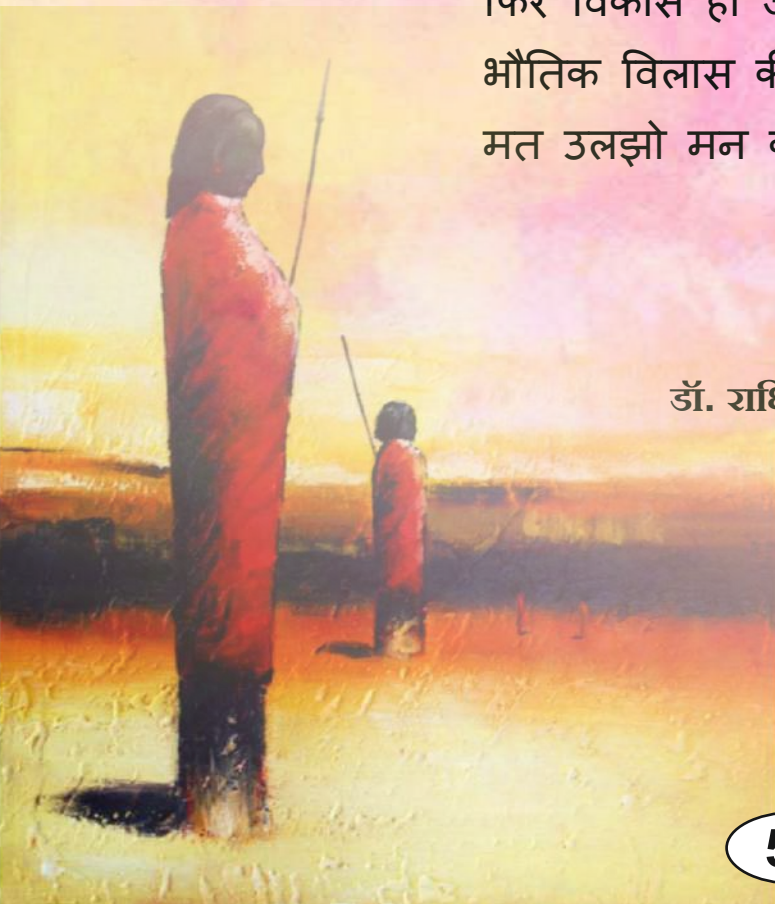
निखरने लगीं कलाएँ फिर से
रचने लगीं विधाएँ फिर से,
अपने से पहचान हो गई,
जिंदगी फिर आसान हो गई!

दुर्दैव ने सबको दिया है धोखा,
दुर्भाग्य सही पर मिला है मौका,
व्यर्थ न जाने दें हम इसको,
स्वस्थ ,समर्थ बनायें इसको।

प्रकृति प्रदूषित करे न कोई,
इससे बड़ा नहीं है कोई
मंदिर-मस्जिद का ये झगड़ा,
मन में रखो न कोई रगड़ा,
कर्म धर्म है इसको जानो,
बस मानवता को पहचानों!

सब समान हों दृष्टि में,
छोटा नहीं कोई सृष्टि में,
मन हो विकसित, तन हो विकसित,
फिर विकास हो जीवन में,
भौतिक विलास की सीमा हो,
मत उलझो मन की उलझन में!

डॉ. राधिका सिंह



महादानव

हाहाकार मचा है जग में,
कोई राह नहीं सूझे।
अजब पहेली बना कोरोना,
कौन सयाना जो बूझे।

कभी सुना ही नहीं,
कहीं देखा भी नहीं।
वेद-पुराणों में पाया नहीं,
नहीं पढ़ा इतिहासों में,
कोई रूप ना स्वरूप है,
अस्तित्व न ही अरूप है,
कीट है किटाणु है।
भयंकर भीत भरा विषाणु है,
देवों-सा रक्षक नहीं, भक्षक है,
चुपके-से डँसने जैसा तक्षक है,
कहाँ से आया, कैसे आया,
जाने ना कोई किसका जाया।

बड़े-बड़े युद्ध किये,
विश्व-विजयी भी क्रुद्ध हुये,
महामारी भी झेले हैं,
सुख-दुख के खेल खेले हैं।
अपने-पराये का भाव भी रखा ,
देश-धर्म का मान भी रखा।
अनजाने रोग से भोग भरी दुनिया ने
कोई पहचान नहीं रखा।

क्या है, कैसे है, उलझन भरे प्रश्न हैं,
उत्तर ज्ञान-विज्ञान से परे है,
पूरा विश्व ग्रस्त है जिससे,
मानवता भी त्रस्त है,
ऐसे महा महा दानव का
सूझे ना कोई अंत है
सूझे ना कोई अंत है !!

डॉ. राधिका सिंह



रचनाकार क्या करता है

रचनाकार क्या करता है
सिर्फ अभिव्यक्ति?
या इससे इतर भी कुछ

देश, समाज, संस्कृति, कला
राजनीति, इतिहास, मनुष्य भला
भाषाएँ और फ़लसफ़ा
हमने तो इन विषयों को
इन्हीं रचनाकारों से जाना था
और समझ पाया था कि
कलाएँ मनुष्य को औदात्य प्रदान करती हैं
मनुष्य को थोड़ा और अधिक मनुष्य बना देती हैं
सामाजिक ताने-बाने की गिरहों को
उधड़ने से बचा लेती हैं
बताती हैं हमारी ग़लतियों को
जो हमने सदियों पहले की हैं
करते आ रहे हैं
पर अभी भी स्वीकार का साहस नहीं है

फिर भी
इतिहास की उन ग़लतियों पर
उन ग़लतियों में शामिल लोग भी
अब हिम्मत बांध कर सच कह रहे हैं
ग़लतियाँ स्वीकार रहे हैं
सदियों से मूक-बधिर बने
केवल देखते रहने वाले समूहों

के रक्त में उबाल आया
हम सब उसके गवाह बन रहे
कुकुरमुत्ते अब गुलाबों पर भौहें तानते हैं
एक बड़ा तबका जिसके दुःख अनाविव्यक्त रहे
जिस पर पाबंदियाँ रही हों

अब लगातार खुद को अभिव्यक्त करने लगा है
नए माध्यमों ने क्रांति को आवाज़ दी है
मध्य पश्चिमी एशिया में अरब स्प्रिंग को कौन भूल सकेगा
जिसने सत्ताओं को पलट दिया
एक बड़े बदलाव की नींव का ईंट बना लेकिन बड़े सुनियोजित
ढंग से कला और अभिव्यक्ति और नए माध्यमों के साथ केवल
चालाकियाँ
एजेंडा
पॉलिटिक्स
इससे कला के कलात्व में हास हुआ
मनुष्य के मनुष्यत्व में हास हुआ
भलमनसाहत में हास हुआ
जिन नए माध्यमों ने आवाज़ें दीं
आज उन्हें सुन केवल घड़ियाली रोना
मौके पर कभी मौजूद न होना
शेष है
सारी कलाएँ और सबकी अभिव्यक्तियाँ
मौजूद हैं
पीड़ाएँ यथावत अपने वास्तविक रूप में
फट पड़ने को बारूद हैं....

अनुराग सिंह शेखर

अपनी आभासी दुनिया में नहीं...

झलक टिक - टॉक पर
राइट स्वाइप टिंडर पर
मैसेज व्हाट्स अप पर
वीडियो कॉल पर इकरार
फंतासी भरा प्यार
शादी हुई इंटरनेट बाजार
हनीमून मोमेंटस फेसबुक लाइव पर
बच्चा होम डिलीवरी....

किस डे से किक डे की इमोजी अब देखिये
मतभेद ट्विटर पर
मनभेद स्टेट्स पर
अलगाव - सुझाव ग्रुप पर
ऑनलाइन कोर्ट नोटिस जी - मेल पर
डाइवोर्स हस्ताक्षर ई- मेल पर
पार्टिशन - पार्टी कॉल कॉन्फ्रेंसिंग पर

और ऐसे हम अपने सभी समाज से कट गये
अब तक जिस प्रोफाइल को रियल पर्सनैलिटी जाने
वर्चुअल अस्मिता - अस्तित्व को अपना सबकुछ पल - पल माने
वे भी यही जता गये कि वे मैं नहीं हैं
वो भी वही जगा गये कि वो मैं नहीं हूँ
यूँ -
सोशल साइड्स का
अपना अलग, बिल्कुल स्वतंत्र
अस्तित्व रहा ।

विभागीय गतिविधियाँ

2019-20

आयोजित कार्यक्रमों का विवरण

हिंदी विभाग द्वारा इस सत्र में जिन साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन किया गया, उनका विवरण इस प्रकार है-

दिनांक 3 अप्रैल 2019 को विभागीय संस्था साहित्यिकी द्वारा रोज़गार कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आमंत्रित वक्ता थे दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रोफेसर डॉ० पूरनचंद टंडन।

दिनांक 28 अगस्त 2019 को विभाग द्वारा प्रथम वर्ष की छात्राओं के लिये नवागंतुक स्वागत समारोह का आयोजन किया गया।

दिनांक 18 सितंबर 2019 को हिंदी-दिवस के उपलक्ष्य में व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसका विषय था “हिंदी मीडिया और रोज़गार”। इस अवसर पर आमंत्रित वक्ता थे आकाशवाणी के पूर्व उप-महा-निदेशक डॉ० लक्ष्मीशंकर बाजपेयी।

दिनांक 15 जनवरी 2020 को बुनोकथा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों की छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के अतिरिक्त एक सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया।

दिनांक 12 फरवरी 2020 को रचनाकार से परिचय कार्यक्रम के अंतर्गत एक व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें कथाकार और नाटककार के रूप में ख्यात प्रो० असगर वज़ाहत को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर छात्राओं ने अरविंद गौड़ द्वारा रचित नुक्कड़ नाटक ‘दस्तक’ का भी मंचन किया गया।



रचनाकार असगर वजाहत से मुलाकात
विषय : नाटकों में लोकतंत्र



"दस्तक" बुक्कड़ नाटक का मंचन



फ्रेशर्स पार्टी २०१९-२०



लक्ष्मीकांत वाजपेयी "हिंदी दिवस" के अवसर पर



छात्राओं द्वारा "बकरी" नाटक का मंचन